नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 044
दि. 16.11.2025,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

नौगाम थाने में जांच के दौरान विस्फोटकों का जखीरा फटा, नौ की मौत और 32 घायल; पूरे प्रशासनिक तंत्र में मचा हड़कंप

(जीएनएस)। जम्मू-कश्मीर के नौगाम पुलिस स्टेशन में शुक्रवार देर रात एक ऐसा हादसा हुआ जिसने पूरे प्रशासन, सुरक्षा एजेंसियों और स्थानीय जनता को गहरे सदमे में डाल दिया। रात करीब 11 बजकर 20 मिनट पर पुलिस स्टेशन परिसर में रखे विस्फोटकों के अचानक फटने से एक भयावह धमाका हुआ, जिसकी आवाज़ दूर-दूर तक सुनाई दी। केंद्रीय गृह मंत्रालय के अनुसार इस दुर्घटनावश विस्फोट में नौ लोगों की मौत हो गई, जबकि 32 लोग घायल हो गए हैं। गृह मंत्रालय ने इस घटना को बेहद गंभीर बताया है और कहा है कि अभी जांच पूरी होने तक किसी भी तरह की अटकलों से बचना आवश्यक है। इस दर्दनाक घटना की शुरुआत कुछ दिन पहले तब हुई जब नौगाम पुलिस ने एक पोस्टर से मिले अहम संकेतों के आधार पर एक बड़े आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया था। यह ऑपरेशन काफी संवेदनशील था और इसके परिणामस्वरूप पुलिस ने एफआईआर नंबर 162/2025 के तहत कई महत्वपूर्ण सबूत बरामद किए। इन सबूतों में भारी मात्रा में विस्फोटक और रासायनिक पदार्थ शामिल थे, जिनकी प्रकृति अत्यंत खतरनाक और अस्थिर मानी जाती है। बरामद सामग्री इतनी संवेदनशील थी कि सुरक्षा मानकों के अनुसार इन्हें पुलिस स्टेशन के ही खुले क्षेत्र में सुरक्षित दूरी पर रखा गया था और बीते दो दिनों से फोरेंसिक विशेषज्ञों की देखरेख में उनका विश्लेषण चल रहा था। गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव (जम्मू-कश्मीर डिवीजन) प्रशांत लोखंडे ने बताया कि बरामद विस्फोटक उच्च संवेदनशीलता वाले थे और छोटे से कंपन या तापमान में हल्की-सी गड़बड़ी भी इनके लिए जोखिम पैदा कर सकती थी।

विशेषज्ञ लगातार रासायनिक परीक्षण, फोटोग्राफी और दस्तावेज़ीकरण कर रहे थे। लेकिन शुक्रवार रात अचानक ऐसी अप्रत्याशित प्रतिक्रिया हुई जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। एक क्षण में हुए इस भीषण विस्फोट ने पुलिस स्टेशन परिसर को हिला दिया और कुछ ही सेकंडों में स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई। विस्फोट की तीव्रता इतनी ज्यादा थी कि पुलिस स्टेशन की इमारत का बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। दीवारें टूट गईं, खिड़कियों के शीशे दूर तक बिखर गए और आसपास के ढांचे भी झटकों से हिल गए। घटनास्थल पर उपस्थित पुलिसकर्मियों और कर्मचारियों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। इस हादसे में 27 पुलिसकर्मी, दो राजस्व अधिकारी और तीन नागरिक घायल हुए, जबकि नौ लोगों ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में शिफ्ट किया गया, जहाँ कई की हालत अब भी गंभीर बताई जा रही है। अस्पतालों में रात भर अफरा-तफरी और चिंताजनक माहौल बना रहा।

घटना के बाद केंद्रीय और स्थानीय प्रशासन पूरी तरह सक्रिय हो गया। वरिष्ठ अधिकारी तुरंत नौगाम पहुंचे और घटनास्थल को पूरी तरह सील कर दिया गया। फोरेंसिक टीमें, बम-निष्क्रिय दस्ता और आपदा प्रबंधन दल लगातार घटनास्थल की जांच में जुटे हुए हैं। प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि विस्फोट किसी बाहरी हमले का परिणाम नहीं बल्कि जांच के दौरान हुई रासायनिक प्रतिक्रिया का नतीजा था, लेकिन अंतिम निष्कर्ष विशेषज्ञों की विस्तृत रिपोर्ट के बाद ही सामने आएगा। गृह मंत्रालय ने शोक व्यक्त करते हुए कहा है कि यह दुर्घटना अत्यंत दुखद है और सरकार मृतकों के परिजनों के साथ हर संभव सहायता और सहयोग करेगी। संयुक्त सचिव प्रशांत लोखंडे ने यह भी कहा कि इस तरह की संवेदनशील जब्ती सामग्री को संभालते समय सुरक्षा मानकों के उच्चतम स्तर का पालन अनिवार्य होता है और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए प्रक्रियाओं की भी समीक्षा की जाएगी। मंत्रालय ने मीडिया और जनता से अपील की है कि बिना तथ्यों की पुष्टि किए किसी भी तरह के दावे न फैलाए जाएं क्योंकि इससे जांच प्रभावित हो सकती है। नौगाम पुलिस स्टेशन परिसर में फैली तबाही और क्षत-विक्षत ढांचे की तस्वीरें यह बताने के लिए पर्याप्त थीं कि विस्फोट कितना भयावह था। स्थानीय लोगों ने भी बताया कि धमाका इतना तेज़ था कि कुछ क्षणों तक उन्हें लगा जैसे भूकंप आ गया हो। कई परिवार रात भर दहशत में जागते रहे। सुरक्षा एजेंसियों ने इलाके में सख़्त निगरानी बढ़ा दी है और आसपास के क्षेत्रों में अतिरिक्त बल भी तैनात कर दिए गए हैं। यह हादसा सुरक्षा एजेंसियों को चेतावनी देता है कि आतंक-रोधी अभियानों में बरामद सामग्री कितनी संवेदनशील हो सकती है और उसकी जांच किस स्तर की सावधानी की मांग करती है। फिलहाल प्रशासन की प्राथमिकता घायलों का उपचार, मृतकों के परिवारों को सहायता और घटना के वास्तविक कारणों की गहराई से जांच है। पूरे क्षेत्र में अभी भी भय और शोक का माहौल है, और यह दुर्घटना लंबे समय तक लोगों की स्मृतियों में एक दर्दनाक अध्याय के रूप में दर्ज रहेगी।

ट्रंप का बड़ा फैसला: कॉफी, मांस, केला और संतरा अब टैक्स–फ्री; अमेरिकी उपभोक्ताओं को महंगाई से राहत

(जीएनएस)। वाशिंगटन। किराने की ऊंची कीमतों से परेशान अमेरिकी परिवारों की नाराज़गी आखिरकार व्हाइट हाउस तक पहुंच गई है। लगातार बढ़ते जन–दबाव और हालिया स्थानीय चुनावों में डेमोक्रेट्स की मजबूती के बीच राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बड़ा आर्थिक कदम उठाते हुए कॉफी, मांस, केला, संतरे का रस और दो सौ से अधिक रोज़मर्रा की खाद्य वस्तुओं पर लगाए गए आयात शुल्क को तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दिया है। यह राहत शुक्रवार से पूरे अमेरिका में लागू हो गई है। ट्रंप प्रशासन ने इसे महंगाई पर काबू पाने की दिशा में "ऐतिहासिक और निर्णायक" कदम बताया है। राष्ट्रपति ट्रंप ने एयर फोर्स वन में पत्रकारों से कहा कि अमेरिका में "कुल मिलाकर वास्तविक मुद्रास्फीति नहीं है," हालांकि उन्होंने यह स्वीकार किया कि कुछ क्षेत्रों में कीमतें बढ़ने की शिकायतें बढ़ी हैं। उनके अनुसार, टैरिफ हटाने का फैसला अमेरिकी उपभोक्ताओं को तत्काल राहत देने के इरादे से लिया गया है।

देशभर में पिछले एक वर्ष से कॉफी, मांस, ताज़ा फलों और पैक्ड खाद्य सामग्री की कीमतें ऐतिहासिक स्तर पर पहुंच गई थीं। कई राज्यों में किराना महंगाई स्थानीय चुनावों का प्रमुख मुद्दा बनी। मतदाताओं ने जीवन–यापन की ऊंची लागत पर खुलकर असंतोष जताया, जिसने व्हाइट हाउस पर दबाव और बढ़ा दिया।

सूचकांक के सितंबर के आंकड़े दिखाते हैं कि मांस के दाम पिछले वर्ष की तुलना में 13 प्रतिशत महंगे हुए, जबकि स्टेक की कीमत 17 प्रतिशत तक उछल गई—जो पिछले तीन वर्षों की सबसे तेज़ बढ़त है।

ट्रंप सरकार का दावा है कि आयात शुल्क हटने से खाद्य सामग्री की कीमतों में अगले कुछ हफ्तों में ठोस गिरावट देखने को मिलेगी, हालांकि विपक्षी दल इसका श्रेय जनता के विरोध और चुनावी दबाव को देते हैं।

इसी के साथ, प्रशासन ने अर्जेंटीना, इक्वाडोर, ग्वाटेमाला और अल सल्वाडोर के साथ "फ्रेमवर्क व्यापार समझौते" की घोषणा भी की है। इन समझौतों के अंतिम रूप लेने के बाद इन देशों से आने वाले कई कृषि और खाद्य उत्पादों पर भी शुल्क समाप्त हो जाएगा।

सूत्रों के अनुसार, व्हाइट हाउस वर्ष के अंत तक भारत और कुछ अन्य बड़े व्यापारिक साझेदार देशों के साथ भी व्यापक व्यापार समझौते आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहा है, ताकि खाद्य आपूर्ति श्रृंखला को स्थिर किया जा सके और अमेरिकी बाजार को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके।

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि महंगाई की मौजूदा रफ्तार में आयात शुल्क की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही। कंपनियों पर बढ़ते खर्च का बोझ सीधे उपभोक्ताओं पर डाला गया और विशेषज्ञों को आशंका थी कि अगर अतिरिक्त टैरिफ जारी रहते तो आने वाले महीनों में खाद्य–वस्तुओं के दाम और तेज़ी से बढ़ सकते थे। इसी पृष्ठभूमि में प्रशासन ने कॉफी, कोको, संतरा, पेपरिका, अकाई बेरीज, कई प्रकार के उर्वरक और खाद्य उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले रसायन समेत 200 से अधिक उत्पादों को शुल्क–मुक्त करने की घोषणा की।

मांस बाजार पर भी महंगाई की मार जारी है। अमेरिका दुनिया का एक प्रमुख मांस उत्पादक देश होने के बावजूद, मवेशियों की लगातार घटती संख्या ने बाजार में भारी दबाव बना दिया है। उपभोक्ता मूल्य

बिहार चुनाव की करारी हार के बाद लालू परिवार में गहरी तकरार, बेटी रोहिणी आचार्य ने राजनीति और परिवार से किया किनारा, राजद में बढ़ती दरार खुलकर आई सामने

(जीएनएस)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 का सबसे बड़ा राजनीतिक भूचाल केवल राजद की करारी हार नहीं रहा, बल्कि इस हार के बाद लालू प्रसाद यादव के परिवार में उभरते गहरे मतभेद रहे, जिन्होंने पार्टी की अंदरूनी कमजोरियों को पूरी तरह उजागर कर दिया है। बिहार की राजनीतिक विरासत जिसे दशकों तक लालू यादव ने संभाला, वह अब परिवारिक संघर्षों और लगातार टूटते भरोसे के बोझ तले लड़खड़ाती दिख रही है। चुनाव नतीजों में राजद का सिर्फ 25 सीटों तक सिमटना पहले ही झटका था, लेकिन इसके बाद जो घटनाएँ सामने आईं, उन्होंने स्थिति को और विस्फोटक बना दिया। पटना में राजनीतिक गलियारों में शनिवार सुबह से ही हलचल मची रही, जब लालू यादव की बेटी और चर्चित नेत्री रोहिणी आचार्य ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक ऐसा पोस्ट साझा किया जिसने पूरे राज्य की राजनीति में हलचल पैदा कर दी। रोहिणी ने साफ शब्दों में लिखा कि वह राजनीति छोड़ रही हैं और परिवार से अपना नाता खत्म कर रही हैं। यह घोषणा ऐसे समय आई जब राजद अपनी सबसे बड़ी चुनावी हार का सामना कर रहा है और पार्टी का संगठनात्मक ढांचा पहले से ही गहरे भ्रम में है। रोहिणी के इस अचानक फैसले ने

राजनीति से अधिक पारिवारिक रिश्तों में पैदा हुई खाई को उजागर किया है। रोहिणी ने अपने पोस्ट में यह भी कहा कि उन्होंने यह फैसला संजय यादव और रमीज के कहने पर लिया है और वह "सारा दोष अपने ऊपर ले रही हैं।" यह बयान जितना भावनात्मक लगा, उतना ही राजनीतिक भी था। संजय यादव लंबे समय से तेजस्वी यादव के रणनीतिक सलाहकार रहे हैं और उन पर राजद के भीतर फैसलों को प्रभावित करने के आरोप लगातार लगते रहे हैं। तेज प्रताप यादव कई बार संजय यादव के प्रति अपनी नाराजगी खुले मंच से जाहिर कर चुके हैं और उन्हें "जयचंद" जैसे शब्दों से भी संबोधित कर चुके हैं। अब रोहिणी के बयान में भी संजय यादव और रमीज का नाम सामने आने से यह साफ हो गया है कि लालू परिवार के भीतर गुटबाजी अपने चरम पर पहुँच चुकी है।

रोहिणी आचार्य का यह कदम अचानक नहीं आया। पिछले कुछ वर्षों में पारिवारिक रिश्ते लगातार तनाव में रहे। 2023 में जब उन्होंने अपने पिता को किडनी दान कर पूरे देश में सराहना बटोरी, तब वह राजद परिवार में सबसे भावनात्मक और भरोसेमंद शख्सियत मानी जा रही थीं। लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में छपरा से मिली हार ने उनके राजनीतिक करियर को झटका दिया। इसके बाद उन्हें पार्टी बैठकों से दूर किया गया और परिवारिक निर्णयों में भी उनकी भागीदारी कम कर दी गई। अब जब उन्होंने सार्वजनिक रूप से राजनीति और परिवार दोनों से दूरी बनाने का फैसला किया है, तो यह स्पष्ट संकेत है कि भीतर ही भीतर लंबे समय से उबल रहा असंतोष अब सतह पर आ गया है।

लालू परिवार में यह पहली बड़ी दरार नहीं है। बड़ा बेटा तेज प्रताप यादव पहले ही अनुष्का यादव विवाद के बाद परिवार से दूर किए जा चुके हैं। उनका पार्टी में योगदान भी सीमित कर दिया गया और संगठन में उनकी कोई प्रभावी भूमिका नहीं बची। अब रोहिणी का अलग होना पार्टी और परिवार दोनों के लिए गंभीर आंतरिक संकट का संकेत है। लालू प्रसाद यादव की राजनीतिक विरासत जिस एकता पर टिकी थी, वह अब बिखरती हुई नजर आ रही है। तेजस्वी यादव पर पार्टी की जिम्मेदारी तो है ही, लेकिन परिवार के भीतर संबंधों को संभालने का दबाव भी लगातार बढ़ रहा है।

राजद और लालू परिवार के भीतर तनाव कोई नया विषय नहीं है, लेकिन चुनावी हार के बाद यह तनाव इतने तीखे रूप में सामने आएगा, इसकी कल्पना कम ही लोगों ने की थी। संगठन के कई नेता मानते हैं कि पार्टी की लगातार गिरती विश्वसनीयता, बदलते सामाजिक समीकरण और त्वरित निर्णय लेने की कमजोर रणनीति ने इस स्थिति को जन्म दिया है। तेजस्वी यादव की नेतृत्व शैली पर भी सवाल उठ रहे हैं और परिवारिक सदस्यों का असंतोष अब सार्वजनिक हो चुका है। आत्ममंथन की बैठकें जारी हैं, लेकिन भीतर ही भीतर यह संघर्ष अब वैचारिक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर फैल चुका है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि राजद जिस संयुक्त और समन्वित नेतृत्व के दम पर आगे बढ़ सकता था, वही अब सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। पार्टी की हार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि परिवारिक मतभेद अब संगठनात्मक कमजोरी में बदल चुके हैं और अगर इन्हें समय रहते सुलझाया नहीं गया, तो राजद आने वाले वर्षों में और अधिक बिखराव का सामना कर सकती है। चुनावी मैदान में हार से अधिक चिंता का विषय है यह पारिवारिक टूटन, जिसने लालू यादव की राजनीतिक विरासत को एक नए मोड़ पर खड़ा कर दिया है।

बिहार की राजनीति इन दिनों जिस करवट से गुजर रही है, उसमें लालू यादव का परिवार अब सबसे मुश्किल दौर से गुजर रहा है। रोहिणी के फैसले ने परिवार के भीतर जमे द्वंद्व को सामने ला दिया है, और यह भविष्य के लिए एक बड़ा सवाल छोड़ गया है कि क्या राजद इस आंतरिक तूफ़ान को झेल पाएगी या आने वाले वक्त में पार्टी की एकता और नेतृत्व दोनों को फिर से परिभाषित करना पड़ेगा।

पालघर में मासूम की मौत से सनसनी: स्कूल में 100 उठक-बैठक की सजा ने छीनी छठवीं की छात्रा की जान?

(जीएनएस)। पालघर। वसई क्षेत्र के सतिवली स्थित एक निजी स्कूल में पढ़ने वाली कक्षा छह की छात्रा अंशिका की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत ने पूरे इलाके को हिलाकर रख दिया है। परिजनों और मनसे कार्यकर्ताओं का आरोप है कि एक सप्ताह पहले देर से स्कूल पहुंचने पर बच्ची को 100 उठक-बैठक की कठोर सजा दी गई थी, जिससे उसकी तबीयत बिगड़ी और शुक्रवार रात उसने मुंबई के एक अस्पताल में दम तोड़ दिया। मौत की यह खबर सामने आते ही शिक्षा विभाग और प्रशासन हरकत में आ गया है, जबकि स्कूल प्रबंधन ने आरोपों पर सवाल उठाए हैं।

पालघर के इस दर्दनाक मामले की शुरुआत 8 नवंबर को हुई, जब सुबह कुछ मिनट देर से पहुंचने पर अंशिका सहित चार छात्रों को कथित रूप से उठक-बैठक की सजा दी गई। मनसे नेता सचिन मोरे ने दावा किया कि अंशिका पहले से ही स्वास्थ्य संबंधी समस्या से पीड़ित थी, इसके बावजूद शिक्षक ने बिना सोचे-समझे कठोर दंड दे दिया। परिजनों का कहना है कि सजा के बाद से ही वह लगातार कमजोरी, दर्द और थकान की शिकायत कर रही थी, पर स्कूल प्रबंधन इसे सामान्य बताकर बचता रहा।

इधर, स्कूल के एक शिक्षक ने मनसे और परिजनों के आरोपों पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि छात्रा ने वास्तव में 100 उठक-बैठक किए भी थे या नहीं। उन्होंने कहा कि मौत के पीछे कोई अन्य चिकित्सकीय कारण भी हो सकता है और इसे सीधे स्कूल की सजा से जोड़ना जल्दबाजी होगी। शिक्षक ने यह भी जोड़ा कि विद्यालय में छात्रों के लिए अनुशासनात्मक कदम तो उठाए जाते हैं, लेकिन 'अत्यधिक सजा' देना उनकी नीति में शामिल नहीं है।

लाल किले ब्लास्ट से पहले नूंह में छिपा था आतंकी डॉक्टर उमर, किराए के कमरे से निकली थी I-20 कार

(जीएनएस)। दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के सामने हुए कार ब्लास्ट की जांच जैसे–जैसे आगे बढ़ रही है, वैसे–वैसे आतंकी डॉक्टर उमर को लेकर नए और चौंकाने वाले तथ्य सामने आ रहे हैं। जांच एजेंसियों ने अब यह साफ कर लिया है कि ब्लास्ट से ठीक पहले डॉ. उमर हरियाणा के नूंह जिले में रह रहा था और उसी किराए के कमरे से वह I-20 कार लेकर दिल्ली के लिए निकला था, जिसमें विस्फोटक सामग्री भरी हुई थी। नूंह के हिदायत कॉलोनी स्थित यह मकान, जहां उमर ने अस्थायी रूप से अपना ठिकाना बनाया था, अब धमाके की पूरी साजिश का अहम केंद्र बनकर उभर रहा है।

दिल्ली पुलिस और विशेष सेल की टीमें पिछले पांच दिनों से नूंह में डेरा डाले हुए हैं और लगातार हिदायत कॉलोनी और अल-फलाह मेडिकल कॉलेज से जुड़े लोगों से पूछताछ कर रही हैं। शनिवार को तो पूरा दिन जांच दल उसी कॉलोनी में बीता, जिसकी तंग गलियों और साधारण मकानों के बीच आतंक की यह परतें धीरे-धीरे खुलती जा रही हैं। विभागीय सूत्रों ने पुष्टि की है कि उमर ने धमाके से लगभग दस दिन पहले हिदायत कॉलोनी के एक मकान में किराए पर कमरा लिया था। यह मकान दिल्ली-अलवर रोड पर रहने वाली एक महिला का है, और कमरे की व्यवस्था यूनिवर्सिटी के इलेक्ट्रिशियन शोएब ने कराई थी, जो फिलहाल पुलिस की गिरफ्त में है।

जांच में यह भी सामने आया है कि 10 नवंबर को जिस दिन धमाका हुआ, उसी सुबह आतंकी उमर इसी किराए के कमरे से अपनी I-20 कार लेकर निकला था। पुलिस का मानना है कि तब कार में विस्फोटक सामग्री मौजूद थी और वह दिल्ली की ओर रवाना हुआ था। शोएब

की साली के इस मकान में उमर जिस शांति से रहा, वह स्थानीय प्रशासन और पड़ोसियों के लिए एक बड़ा सवाल बन गया है। न तो किसी को उसकी गतिविधियों पर शक हुआ और न ही खुफिया एजेंसियाँ उसकी मौजूदगी का पता लगा सकीं।

दिलचस्प बात यह है कि दिल्ली पहुंचने से पहले उमर ने फिरोजपुर झिरका के एक एटीएम से पैसे निकालने की कोशिश की थी, लेकिन जब लेनदेन असफल रहा, तब वह नूंह की ओर मुड़ गया और वहीं कमरा लेकर ठहर गया। उसके कार का एक वीडियो नूंह की एक अल्ट्रासाउंड सेंटर के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद मिला है, जिसमें उसकी गाड़ी कॉलोनी के भीतर जाती दिखाई देती है। हालांकि वह वहां से कब निकला और किस मार्ग से दिल्ली पहुंचा—यह अभी भी जांच एजेंसियों के लिए एक उलझा हुआ रहस्य है।

इस पूरे मामले में आतंकवादी उमर के नूंह दौरे की दो घटनाएं अब तक सामने आ चुकी हैं। पहली, फिरोजपुर झिरका टोल प्लाजा से उसका गुजरना रिकॉर्ड हुआ था। दूसरी, उसी इलाके के बीवां–पहाड़ी रोड स्थित एक एटीएम में पैसे निकालने की उसकी कोशिश का वीडियो मिला है। इन दोनों सबूतों ने उसकी गतिविधियों की समयरेखा को स्पष्ट किया है और यह स्थापित किया है कि ब्लास्ट से घंटों पहले वह नूंह क्षेत्र में सक्रिय था।

जांच एजेंसियाँ अब यह भी खंगाल रही हैं कि नूंह स्थित अल-आफिया मेडिकल कॉलेज और अल-फलाह यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले कुछ मेडिकल छात्रों और कर्मचारियों से उसका क्या और कितना संपर्क रहा। सूत्रों के अनुसार यह संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि उमर ने यहां अपने पुराने परिचितों या सहयोगियों से मुलाकात की हो या साजिश के कुछ हिस्सों को अंजाम दिया हो।

नूंह के एक शांत, साधारण किराए के कमरे से निकलकर लाल किले के सामने हुए धमाके तक पहुंचने वाली यह कहानी पूरे घटनाक्रम को और अधिक रहस्यमय बना रही है। यह साफ है कि उमर ने नूंह को एक सुरक्षित पनाहगाह और अपने अंतिम चरण की योजना के केंद्र के रूप में चुना था। दिल्ली पुलिस अब इस पड़ाव के हर पहलू को जोड़कर पूरी साजिश की कड़ियों को पुख़्ता करने में जुटी है।

संपादकीय

मजबूत संगठन व रणनीति से कामयाबी

बेहद जटिल सामाजिक परिस्थितियों वाले देश के बड़े राज्य बिहार का महासंग्राम आखिरकार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने जीत ही लिया। एनडीए ने बिहार में विपक्ष के महागठबंधन को करारी शिकस्त दी है। यह जीत पिछले साल महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति गठबंधन द्वारा महाविकास अघाड़ी को करारी शिकस्त देने जैसी ही है। चौंकाने वाली बात यह है कि बिहार में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और उसने उस राज्य में अपनी स्थिति मजबूत की है, जहां अभी तक उसका अपना मुख्यमंत्री नहीं रहा है। बिहार के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जनता दल यूनाइटेड यानी जदयू ने तमाम मुश्किलों को पार करते हुए सम्मानजनक दूसरा स्थान हासिल किया है। चुनाव से पहले नीतीश कुमार महागठबंधन के नेताओं के निशाने पर थे। उन्हें थका हुआ, बीमार और रिटायर होने वाला राजनेता बताया जा रहा था। कहा जा रहा था कि भाजपा ने नीतीश कुमार को पार्टी के मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में पेश नहीं किया। नीतीश कुमार के जो आलोचक उनकी विदाई लेख लिखने की जल्दी में थे, उन्हें चुनाव परिणामों के बाद मुंह की खानी पड़ रही है। जनता के फैसले ने बीते 2020 के विधानसभा चुनाव मे सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाले राष्ट्रीय जनता दल यानी राजद को इस बार तीसरे स्थान पर पहुंचा दिया है। बहरहाल, इस विधानसभा चुनाव के एकतरफा नतीजों का एक निष्कर्ष यह भी है कि सत्ता के लिये भाजपा व जदयू को एक साथ ही रहना होगा। जैसे कि नीतीश के पाला बदलने के चलते उन्हें पलटू राम की संज्ञा दी जाती थी, उसकी संभावना अब नजर नहीं आती। यानी नीतीश कुमार अब पलटू राम वाले अंदाज में नहीं चल सकते। उन्हें इस बात की तसल्ली मिल सकती है कि भारतीय जनता पार्टी, जिसके पास लोकसभा में पूर्ण रूप से बहुमत नहीं है, वह केंद्र में सरकार बचाने के लिये भविष्य में जदयू पर निर्भर रहेगी।

दरअसल, राजनीतिक पंडित कयास लगाते रहे हैं कि नीतीश कुमार को किनारा करने की भगवा पार्टी की कोई भी कोशिश सत्तारूढ़ गठबंधन के लिये मुश्किल खड़ी कर सकती है। वहीं कहा जाता रहा है कि चिराग पासवान एनडीए की कमजोरियों का फायदा उठाने से नहीं हिचकिचाएंगे। हालांकि, भाजपा नीतीश कुमार को बाहर करने के प्रलोभन का ज्यादा देर विरोध नहीं कर पाएगी, जैसा उसने महाराष्ट्र में शिवसेना के एकनाथ शिंदे के साथ किया था। बहरहाल, एक बात तो तय है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जीत ने महागठबंधन को तार-तार कर दिया है। साथ ही पदयात्रा व अपने बयानों से सुर्खियों में रहने वाले प्रशांत किशोर की नई सुबह की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। बिहार चुनाव में पस्त हुए महागठबंधन के दलों के सामने अगले साल विपक्ष शासित राज्य पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले फिर से संगठित होने की एक बड़ी चुनौती होगी। ये वे तीन विपक्षी दुर्ग हैं जिनमें सत्ता हासिल करने के लिये भारतीय जनता पार्टी कोई कसर नहीं छोड़ेगी। बहरहाल, एक बात तो माननी पड़ेगी बिहार में राजग की अप्रत्याशित जीत सारथी नरेंद्र मोदी की छवि, गृहमंत्री अमित शाह की नीति-कूटनीति, भाजपा के मजबूत संगठन, नीतीश कुमार की सामाजिक कल्याण की नीतियों की देन है। वहीं ऐन चुनाव से पहले एकजुट हुए महागठबंधन की विसंगतियां ही उसके पराभाव का कारक बनी। बहरहाल, राजग की महिलाओं को आर्थिक संबल की घोषणाओं, नीतीश की शराबबंदी आदि नीतियां महिला मतदाताओं को रिझाने में कामयाब रही हैं। यही वजह है कि महिला मतदाताओं ने इस विधानसभा चुनाव में बढ़-चढ़कर मतदान किया। यह प्रतिशत बिहार के मतदान इतिहास में रिक़ॉर्ड बनाने वाला था और चुनाव परिणाम भी उतने ही अप्रत्याशित रहे। बहरहाल, एक बार फिर जनतंत्र की भूमि ने अप्रत्याशित चुनाव परिणामों से देश को चौंकाया है। चुनाव परिणाम सामने आने के बाद दिल्ली स्थित भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा नरेंद्र मोदी ने कहा भी कि जिस एमवाई समीकरण को विपक्ष ने संकीर्णताओं के साथ पेश किया था, भाजपा ने उस एमवाई समीकरण को सकारात्मक दृष्टि से महिला व युवा गठजोड़ में तब्दील कर दिया।

नैरेटिव का विकल्प खोजे बिना कैसे हो उद्धार

> "पिछली बार के चुनावों में महागठबंधन को सबसे ज्यादा ताकत अंग प्रदेश और भोजपुर से मिली थी। शाहाबाद क्षेत्र में कांग्रेस और माले के साथ महागठबंधन ने बेहतरीन प्रदर्शन किया था। इलाके 22 सीटों में से पिछली बार एनडीए को सिर्फ दो सीटें मिली थीं। लेकिन इस बार उसका प्रदर्शन करीब सात गुना बेहतर हुआ है।

चाणक्य की धरती के मतदाताओं ने आधुनिक राजनीति के कौटिल्यों को भी हैरत में डाल दिया है। एनडीए की जीत की उम्मीद एक्जिट पोल कर तो रहे थे, लेकिन उन्हें भी इतनी बड़ी जीत की उम्मीद नहीं थी। एनडीए की भारी जीत और तेजस्वी की अगुआई वाले महागठबंधन की करारी हार ने कई राजनीतिक संदेश दिए। समाजवादी गठबंधन के लिए कांग्रेस का साथ पत्थर बांध कर तैरने जैसा हो गया है। जिस भी समाजवादी गठबंधन ने कांग्रेस का हाथ थामा, वह राजनीति के समंदर में डूब गया। इसके पहले उदाहरण बिहार के पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश के अखिलेश यादव हैं। 2017 के विधानसभा चुनावों में यूपी के लड़के के नारे के साथ राहुल गांधी का साथ लेकर अखिलेश चुनावी वैतरणी पार करने उतरे थे, लेकिन भाजपा की लहर में वे डूब गए। 2022 में भी कांग्रेस उनके लिए पतवार नहीं बन सकी। इस बार तेजस्वी के लिए कांग्रेस सहारा नहीं बन पाई। चुनाव नतीजों कुछ वैसे ही हैं, जैसे हम तो डूबे ही सनम, तुझे भी ले डूबेंगे। विपक्षी गठबंधन को अब सोचना होगा कि कांग्रेस का हाथ वह कब और कितना पकड़े कि उसकी सियासी नैया पार लग सके, डूबे नहीं।

बिहार के चुनाव नतीजों ने यह भी संदेश दिया है कि राजनीतिक भंवर में अति आत्मविश्वास सामने से आ रही लहरों के मुकाबले का साहस दें, चाहे न दें, उनकी तासीर और ताकत का अंदाजा नहीं लगने देती। तेजस्वी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है। अति आत्मविश्वास उन्हें ले डूबा। तेजस्वी का अपने शपथ ग्रहण की तारीख तय करना और उसे अति उत्साही अंदाज में लोगों के बीच रखना, एक वर्ग को भले ही अच्छा लगा हो, आम वोटरों को पसंद नहीं आया। रही-सही कसर उनके अति उत्साही नेताओं और कार्यकर्ताओं के मनोबल ने पूरा कर दिया। बिहार की स्थानीय शब्दावली में यह मनोबल नहीं, मनबढ़ होना था। इसने सत्ताधारी एनडीए के जंगलराज के नैरेटिव को उस पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद पहुंचाई, जो जंगलराज के बाद नीतीश के सुशासन राज में पैदा हुई है। जिस तरह स्थानीय चैनलों, यू ट्यूबरों और चुनावी माहौल में कुकुरमुत्तों की तरह कथित मीडिया चैनलों के कैमरों के सामने अठारह-बीस साल वाली लड़कियों तक ने तेजस्वी राज में एक खास वर्ग और जाति से डर की आशंका जताई, उससे साफ हो गया था कि बिहार का चुनावी नजारा क्या रहने जा रहा है। बुजुर्ग महिलाएं और पुरूष जिस तरह जंगल राज की भयावह तसवीरें लोगों के सामने रख रहे थे, उसने भी भावी नतीजों की जानकारी दे दी थी।

मीडिया के एक वर्ग ने एनडीए के नैरेटिक के बरक्स तेजस्वी की अगुआई वाले महागठबंधन का बचाव करने की कोशिशकी। तेजस्वी को उससे अलग दिखाने की कोशिशें भी कम नहीं हुईं। ऐसा करते वक्त तेजस्वी के रणनीतिकार, कांग्रेस से सहानुभूति रखने वाला बौद्धिक वर्ग भूल गया कि एक बड़ा वर्ग अब भी सक्रिय है, जिसने जंगलराज को देखा है। जैसे-जैसे तेजस्वी के नए विजन को पेश करने की कोशिश की गई, वैसे-वैसे प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों में पुराने दिनो के घाव ताजा होते गए। नतीजा सामने है।

पिछली बार के चुनावों में महागठबंधन को सबसे ज्यादा ताकत अंग प्रदेश और भोजपुर से मिली थी। शाहाबाद क्षेत्र में कांग्रेस और माले के साथ महागठबंधन ने बेहतरीन प्रदर्शन किया था। इलाके 22 सीटों में से पिछली बार एनडीए को सिर्फ दो सीटें मिली थीं। लेकिन इस बार उसका प्रदर्शन करीब सात गुना बेहतर हुआ है। इस बार एनडीए कुल मिलाकर 14 सीटें जीत रहा है या जीतने के कगार पर है। साफ है कि इस बार शाहाबाद में एनडीए को बारह सीटों का बंपर फायदा हुआ है। शाहाबाद के रोहतासृ सासाराम जिले की सात विधानसभा सीटों में से सिर्फ एक पर राजद को जीत मिली है, जबकि दो पर लोकजनशक्ति पार्टी, दो पर राष्ट्रीय लोक मोर्चा और एक पर जनता दल यू को जीत मिली है। इसी जिले में प्रशांत किशोर की गृह सीट करगहर आती है, जहां से उन्होंने भोजपुरी गायक रितेश पांडेय को उम्मीदवार बनाया था, लेकिन वे तीसरे स्थान पर रहे। चार सीटों वाले भभुआ में तो राष्ट्रीय जनता दल का तो खाता भी नहीं खुला है। यहां की रामगढ़ विधानसभा सीट आरजेडी के दिग्गज जगदानंद सिंह की मानी जाती है। उनके बक्सर से सांसद बेटे सुधाकर सिंह यहां से विधायक रह चुके हैं। चुनाव के एक दिन पहले यूपी की विधायक पूजा पाल से बदसलूकी के चलते सुधाकर चर्चा में थे। बहरहाल भभुआ की चार में से तीन सीटों पर जहां बीजेपी को जीत मिली है, वहीं एक सीट जनता दल यू के खाते में गई है। इसी तरह शाहाबाद इलाके के बक्सर जिले की चारों सीटों पर एनडीए का कब्जा हुआ है। यहां की दो सीटों पर जनता दल यू, एक पर लोकजनशक्ति पार्टी और एक पर भाजपा को जीत मिली है। शाहाबाद के भोजपुर जिले की सात विधानसभा सीटों में से एक पर माले और एक पर राजद को जीत मिली है। जबकि चार पर भाजपा और एक पर जनता दल यू को सफलता मिली है।

इसी तरह लालू के गढ़ सारण में भी एनडीए ने महागठबंधन को भारी शिकस्त दी है। पिछली बार यानी 2020 के विधानसभा चुनाव में जिले की दस विधानसभा सीटों में से छह पर राजद का कब्जा था। लेकिन इस बार नौ सीटों पर एनडीए को जीत मिल रही है। सिर्फ मढ़ौरा से राजद समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार को जीत मिली है। सारण प्रमंडल के सीवान जिले में भी महागठबंधन का कोई जादू नहीं चल पाया। जिले की सीवान सीट से राजद के कद्दावर उम्मीदवार और विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष अवध बिहारी यादव को बीजेपी के दिग्गज मंगल पांडेय के सामने हार का सामना करना पड़ा है। जिले में आठ विधानसभा सीटें है। जिनमें से पिछली बार यानी 2020 में छह सीटों पर आरजेडी का कब्जा था। लेकिन इस बार यह समीकरण उलट गया है। इस बार राजद के हाथ सिर्फ बड़हरिया और रघुनाथपुर ही लगा है। रघुनाथपुर से बाहुबली रहे शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा सहाब को जीत मिली है। गोपालगंज जिले में ही लालू प्रसाद यादव का पुश्तैनी घर है। लेकिन यहां से भी राष्ट्रीय जनता दल को शिकस्त मिली है। यहां की छह में से सिर्फ दो सीटों पर राष्ट्रीय जनता दल को जीत मिली है, जबकि एक पर भाजपा और तीन पर जनता दल यू को जीत मिली है। दिलचस्प यह है कि जिन 21 सीटों पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने प्रचार किया, वहां एनडीए को जीत मिली है। इसके बाद बीजेपी को यह कहने का मौका मिल सकता है कि उसके पास कहीं ज्यादा विश्वसनीय यादव नेतृत्व है।

मौजूदा विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को मिली पराजय के बाद इसमें शामिल दलों को अपनी रणनीति और अपने नेतृत्व को लेकर विचार करना होगा। यह पराजय विपक्षी गठबंधन में राहुल गांधी के नेतृत्व पर भी सवाल उठाती है। विपक्षी गठबंधन को सोचना होगा कि राहुल की अगुआई कहीं उसकी राह की बाधा तो नहीं बन रही है। उसे यह भी सोचना होगा कि महज नैरेटिव के हथियार और कुछ बौद्धिकों की सोच के सहारे मोदी के हरावल दस्ते को नहीं हराया जा सकता। विपक्षी गठबंधन को राजनीतिक पैंतरेबाजी के साथ ही सांप्रदायिकता के डर वाले नैरेटिव के बरक्स जमीनी हकीकत से जुड़ा कोई दूसरा नैरेटिव अपनाना होगा, लोगों से सीधा संपर्क करना होगा, अपनी पुरानी दबंग छवियों से बाहर निकलने की तरकीब खोजनी होगी। लेकिन सवाल यह है कि क्या महागठबंधन और उसका नेतृत्व ऐसा सोचने को भी तैयार है?

प्रेरणा

जीवन रक्षा का संकल्प

धीमी दोपहर की रोशनी सड़क पर बिखरी थी। हवा में हल्की-सी गरमी थी, जिससे पेड़ों की पत्तियाँ भी जैसे थककर स्थिर हो गई थीं। उसी सड़क के किनारे एक दस-बारह साल का लड़का चलता जा रहा था। उसके हाथ में स्कूल की पुरानी किताबें थीं, पैर में टूटी फीता वाली चप्पल, और चेहरे पर मासूम सरलता। वह अपनी ही दुनिया में खोया हुआ था—कभी गुनगुनाते हुए, कभी आसमान में उड़ते पतंगों को देखते हुए।

रास्ता बिल्कुल सामान्य था, लेकिन घटनाएँ कभी किसी चेतावनी के साथ नहीं आतीं। अचानक पीछे से तेज़ गति से आती एक मोटर उसकी ओर बढ़ी। ड्राइवर ने हॉर्न तो बजाया, पर लड़का हड़बड़ाकर गलत दिशा में हट गया। मोटर का हल्का लेकिन जोरदार झटका उसे सीधे सड़क पर गिरा गया। गिरते ही उसके घुटने बुरी तरह छिल गए, कोहनी फट गई, और खून तुरंत बहने लगा, जैसे कोई खुला झरना फूट पड़ा हो। लड़का चीख भी न पाया; दर्द के साथ डर ने उसे सुन्न कर दिया था।

सड़क पर भीड़ बहुत नहीं थी, पर जो लोग आसपास थे वे अचानक हुए इस हादसे से घबरा गए। कुछ लोग दूर से देखने लगे, कुछ कदम बढ़ाकर फिर रुक गए—जैसे मदद करने और न करने के बीच झूलते मन के कैदी। शायद हर किसी को लगता है कि कोई और मदद करेगा। लेकिन वहीं पास से एक युवक गुजर रहा था—आस्ट्रले। वह कोई महान व्यक्ति नहीं था, न कोई प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता। वह बस एक सामान्य, शांत स्वभाव का युवक था, जिसमें एक बेहद साधारण-सी लेकिन दुर्लभ खूबी थी—दर्द देखकर रुक जाना।

जैसे ही उसकी नजर लड़के पर पड़ी और उसने बहता खून देखा, उसके कदम खुद-ब-खुद दौड़ पड़े। उसने आस-पास खड़े लोगों की तरह सोचा नहीं, बस दौड़कर लड़के के पास बैठ गया। "डरो मत, कुछ नहीं होगा," उसने बेहद शांत आवाज में कहा, जैसे उसकी आवाज में ही उपचार की एक लहर हो।

वह अपनी शर्ट की जेब से रूमाल निकालता है, एक पल को सोचता है कि यह काफी नहीं होगा, फिर उसे दो हिस्सों में फाड़ देता है और बिना एक सेकंड गँवाए, बेहद सावधानी से लड़के के घाव पर कसकर बांध देता है। उसके हाथ इतने आत्मविश्वास से भरे थे कि जैसे उसके भीतर जन्मजात ही कोई चिकित्सक छुपा हो।

पट्टी बांधने के कुछ ही क्षणों में खून का बहना रुकने लगा। लड़के की सांसें जो अभी तक अनियमित थीं, अब स्थिर होने लगीं। उसकी आँखों में डर की जगह भरोसा लौट आया। आस-पास लोग अब सचमुच आगे बढ़ने लगे और आस्ट्रले की पीठ थपथपाने लगे।

किसी ने कहा, "अरे वाह, यह तो डॉक्टर लगता है!"

किसी और ने कहा, "समय रहते न संभालते तो हालत खराब हो जाती!"

लड़के का पिता भी दौड़ता हुआ पहुंचा, लड़के को सीने से लगाया और फिर आस्ट्रले की ओर देखकर बस एक ही वाक्य बोल पाया—"तुमने मेरे बच्चे की जान बचाई है। मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा।"

ये शब्द आस्ट्रले के मन में कुछ इस तरह उतरे कि जैसे वर्षों से उसके जीवन में इंतज़ार कर रहा कोई विचार अचानक जाग उठा हो। उसे लगा कि उसके हाथ किसी की सांसों की डोर थाम सकते हैं। उसे लगा कि यही उसका रास्ता है—जिस पर चलकर वह लोगों को जीवन वापस दे सकता है।

उस शाम आस्ट्रले घर नहीं लौटा, वह सोच में डूबा रहा। उसने एक बार, दो बार, कई बार उस घटना को दोहराया जो अभी हुई थी। हर बार उसके मन में एक ही भाव उठता—अगर मैं न रुकता तो क्या होता? यह विचार उसे झकझोर रहा था, और दूसरी ओर यह एहसास कि मदद करके वह कितना बड़ा काम कर सकता है, उसकी आँखों को चमका रहा था।

आस्ट्रले ने उसी रात एक निर्णय ले लिया—वह चिकित्सा विज्ञान पढ़ेगा। वह लोगों की सहायता करेगा, वह जीवन बचाएगा। भले ही उसके घर की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं थी, भले ही पढ़ाई कठिन थी, और भले ही रास्ता लंबा था, लेकिन उसका संकल्प उससे भी बड़ा था।

आस्ट्रले ने पढ़ाई में खुद को इस तरह झोंक दिया कि जैसे उसे कोई छुपा हुआ खजाना मिल गया हो। दिन-रात किताबों में डूबे रहना, मानव शरीर की जटिल रचना समझना, सर्जरी के साधारण से कठिनतम सिद्धांत पकड़ना—इन सबमें वह मज़ा लेने लगा। उसके हाथ जो उस दिन सड़क पर घायल लड़के की पट्टी बांधते समय स्थिर थे, अब ऑपरेशन थिएटर में भी वैसी ही सजगता और संतुलन दिखाने लगे।

धीरे-धीरे वह एक कुशल चिकित्सक बन गया, फिर एक माहिर सर्जन। ऐसा सर्जन जिसके हाथों में लोगों ने चमत्कार देखे। जिन मरीजों को दूसरों ने असंभव कहकर लौटा दिया था, वे आस्ट्रले के हाथों में नया जीवन पा जाते। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, पर उसके भीतर वही पुरानी सादगी और वही संवेदनशीलता बनी रही—जिसने उसे कभी सड़क पर उस छोटे बच्चे के पास दौड़ने पर मजबूर किया था।

जब भी उससे पूछा जाता कि उसने यह मार्ग क्यों चुना, वह बस मुस्कुरा देता और धीरे से कहता—

"कभी सड़क पर एक छोटे बच्चे को बचाने का मौका मिला था। उसी दिन लगा कि ईश्वर ने मुझे मेरा रास्ता दिखा दिया।"

उसका जीवन उसी घटना से शुरू हुआ एक संकल्प था—
जीवन रक्षा का संकल्प,
जिसने एक साधारण युवक को दुनिया का महान सर्जन बना दिया।

मोदी का कोई तोड़ नहीं: बिहार जीत मायने अनेक

प्रतीकों, मूल्यों, संस्कृति और परंपराओं की पिच पर आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नहीं हरा पाएंगे। ये मोदी और बीजेपी की पसंदीदा पिच है। अगर इस पर विपक्ष फंसा तो उसकी करारी हार सुनिश्चित है विपक्ष हर बार यही ग़लती करता है। वो भारतीय मानस को समझे बिना मोदी को ललकारता है। हिंदू संस्कृति के मानबिंदुओं, परंपराओं और आस्था पर कटाक्ष करता है। अपमानित करता है। विपक्ष को लगता है कि वो हिंदुत्व को गाली देकर जीत सकता है। विपक्ष को लगता है कि वो भारतीय सेना के शौर्य को चुनौती देकर चुनाव जीत सकता है। विपक्ष को ये लगता है कि जाति के नाम पर विभाजन उत्पन्न कर जीत सकता है। अगर इस मुगालते में विपक्ष है तो वो मोदी से कभी नहीं जीत सकता है। क्योंकि कौन से प्रतीकों को कहां और किस अंदाज़ में आज़माना है। ये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बख़ूबी जानते हैं। यूं कहूं तो वो इसमें सिद्धहस्त हैं। इसके जादूगर हैं।

हरियाणा, महाराष्ट्र के बाद बिहार विधानसभा के ये परिणाम बता रहे हैं कि — आप हिंदू संस्कृति का अपमान कर कोई भी चुनावी किला फतह नहीं कर सकते। आप सांविधानिक संस्थाओं का अपमान कर चुनाव नहीं जीत सकते। विपक्ष को ये समझना होगा कि जिस Gen-Z के नाम पर देश में नेपाल जैसी अराजकता का बिगुल फूंका जा रहा था। भारत के Gen-Z ने उसकी हवा निकाल दी है। उसने भर-भर के एकमुश्त वोट NDA की झोली में डालकर राजतिलक कर दिया है। महिलाओं ने बड़ी ख़ामोशी से प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर अपना विश्वास जताया है।

देश की जनता ये जान चुकी है कि वर्षों तक सत्ता में रहने वाली कांग्रेस और आरजेडी समेत तमाम विपक्षी दल अब मुद्दाविहीन हो चुके हैं। क्या देश की जनता को ये नहीं दिखता रहा है कि - कैसे समूचा विपक्ष संसद की कार्यवाही नहीं चलने दे रहा था। क्या देश की जनता ये नहीं देख रही थी कि- कैसे राहुल गांधी के नेतृत्व वाला इंडी गठबंधन अराजकता का वातावरण बना रहा था। राष्ट्रीय हित के मुद्दों में इंडी गठबंधन के दलों का गतिरोध, तुष्टिकरण क्या देश की जनता नहीं देख रही थी?

विपक्षी दलों को क्या लगता कि केवल आचार संहिता लगते ही चुनावी जंग जीती जाती है? अगर ये सोचते हैं तो इससे बड़ी भूल भला क्या हो सकती है? जनता हर समय राजनीतिक दलों, उनके नेताओं के आचरणों को देखती है। परखती है। उसके बाद धैर्यपूर्वक ढंग से आंकलन करती है। तत्पश्चात अपना निर्णय सुनाती है।

जीत के ये आंकड़े बता रहे हैं कि —देश की जनता जान चुकी है कि विपक्ष ऐनकेन प्रकारेण केवल सत्ता हासिल करना चाहते हैं। उनकी नीयत में खोट है। क्योंकि क्षेत्रीय दलों को निगल जाने के बाद केवल 99 सीटें लोकसभा चुनाव में जीतने के बाद कांग्रेस जिस ढंग से ग़ैर ज़िम्मेदाराना व्यवहार कर रही है। कांग्रेस के नेता और विशेष तौर पर राहुल गांधी जिस तरह से मोदी विरोध में—देश विरोधी मानसिकता से ग्रस्त दिख रहे हैं। सामाजिक समरसता को तोड़ने वाले बयान दे रहे हैं। देशद्रोही कम्युनिस्टों की लाइन पर चल रहे हैं। भारतीय समाज में अराजकता, हिंसा फैलाने जैसी बातें कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि जैसे कम्युनिस्टों ने राहुल गांधी को हाईजैक कर लिया हो। क्या जनता ये सब नहीं देखती है? अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से लेकर, हिंदुत्व, छठी मैया आदि के विरुद्ध राहुल गांधी के अनर्गल बयान। मिथ्याप्रचार। भारतीय सेना को अपमानित करते हुए विभाजनकारी बयान देना। बात-बात में हिंदुओं को जातियों में बांटने की वकालत करना। भाषा के आधार पर विभाजन के बीज बोना।तुष्टिकरण के लिए नए वक़्फ़ क़ानून के विरोध में उतरना। घुसपैठ जैसी घातक समस्या को ख़ारिज़ करना।लव जिहाद और कन्वर्जन के आतंक के विरुद्ध चुप्पी साधे रहना। मौन समर्थन देना। नेता प्रतिपक्ष की भूमिका को मज़ाक बना देना। विदेशों में जाकर भारत की सांविधानिक संस्थाओं को कटघरे में खड़ा करना। हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर आघात करना। कम्युनिस्टों की तर्ज़ पर माओ की तरह रेड बुक रखना। बार-बार संविधान का माखौल उड़ाना। RSS जैसे राष्ट्रनिष्ठ संगठनों पर झूठे आक्षेप लगाना। कांग्रेस शासित राज्यों में संविधान की हत्या करते हुए प्रतिबंध लगाने का कुकृत्य करना। प्रधानमंत्री जैसे गरिमामय पद पर बैठे ओबीसी वर्ग से आने वाले — नरेंद्र मोदी जी को — तू-तड़ाक जैसी भाषा से संबोधित करना। जनता ये सब देख रही थी और ये भी गांठ बांध रही थी कि — जो व्यक्ति प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे ओबीसी वर्ग के व्यक्ति के प्रति ऐसी घ्रणा रखता है। वो आम आदमी का क्या सम्मान करेगा? क्या कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल ये भूल गए कि - जनजातीय समाज की बेटी द्रौपदी मुर्मू जी के विरुद्ध उन्होंने राष्ट्रपति का कैंडिडेट उतारा था। वो क्यों? इसीलिए न ताकि कोई जनजातीय समाज का व्यक्ति सर्वोच्च आसंदी पर न बैठ सके। विपक्ष को क्या लगता है कि देश और बिहार की जनता ये सब नहीं देख रही थी? भला, हार मिलने पर — अपने कृत्य क्यों भूल जाते हैं?

वहीं परिवारवाद के शीर्ष उदाहरण राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा और तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव— ये सब क्या ये नहीं जानते हैं कि जनता अब 'परिवारवाद' को उखाड़ फेंक चुकी है। तिस पर भ्रष्टाचारी लालू परिवार। जंगलराज के आतंक का ख़ौफ, लालू यादव की विवशता। धर्मनिष्ठ आचरण वाले तेजप्रताप यादव जैसे भाई का निष्कासन, आरजेडी पर कब्ज़ा और लालू की विवशता भरी ईसाइयत से रंगी 'हैलोवीन' पार्टी। बिहार की जनता ये सब बारीकी के साथ देख रही थी। बिहार की जनता ये जान रही थी कि कैसे तेजस्वी यादव के यहां अब ईसाईयत और मिशनरीज़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। हिंदू परंपराओं को किनारे कर चोट पहुंचाई जा रही है।अन्यथा राजनीतिक फायदे के लिए 'छठी मैया' का राहुल गांधी ने जिस प्रकार से अपमान किया था। बिहार की जनता ये जान रही थी कि किसकी शह पर खेसारी जैसे दोयम दर्जे के लोग — श्रीराममंदिर पर अपमानजनक टिप्पणी कर रहे थे। क्या तेजस्वी यादव इन सबका विरोध नहीं करते?

अभियान

संसार का भ्रम और ईश्वर की शरण: माता पार्वती और श्री रघुनाथजी की कथा

बहुत समय पहले की बात है। जब ब्रह्मांड अपनी प्रारंभिक स्थिति में था, तब संसार अभी पूर्ण रूप से प्रकट नहीं हुआ था। उस समय देवताओं और मनुष्यों में ज्ञान का आदान-प्रदान एक प्राकृतिक प्रक्रिया था। इसी समय माता पार्वती अपने ध्यान और ध्यान साधना में लीन थीं। उनके मन में एक गहन प्रश्न उत्पन्न हुआ—"संसार का वास्तविक स्वरूप क्या है? मनुष्य क्यों जन्म और मृत्यु के अनंत चक्र में फँसा रहता है? दुःख और सुख का यह खेल क्यों चलता है?"

माता पार्वती ने सोचा कि इस प्रश्न का उत्तर केवल उस परम स्रोत से ही प्राप्त हो सकता है, जो असीम, अनादि और अनंत है। उन्होंने अपने हृदय में प्रार्थना की और भगवान रघुनाथजी की शरण में गईं। उन्होंने भगवान से विनती की—"हे प्रभु! हे रघुनाथजी! आप ही ऐसे हैं जिनकी कृपा से सभी भ्रम मिट जाते हैं। संसार की माया और दुःख का यह खेल मैं समझना चाहती हूँ। कृपया मुझे मार्गदर्शन दीजिए।"

भगवान रघुनाथजी ने अपनी करुणामयी दृष्टि से माता पार्वती की ओर देखा। उनकी दृष्टि में इतनी गहराई और शांति थी कि उसे देखकर पार्वती जी का मन सहज ही शांत हो गया। उन्होंने कहा—"हे पार्वती! संसार भले ही असत्य प्रतीत होता हो, लेकिन यह सब मेरे अनुग्रह और शक्ति से ही स्थिर है। जो व्यक्ति मेरी कृपा और ज्ञान से परिपूर्ण होता है, उसके लिए यह संसार भ्रम का कारण नहीं बनता। और जो माया में फँसकर इच्छाओं और मोह में उलझा रहता है, वह दुःख का अनुभव करता है।"

माता पार्वती ने गहन ध्यान से पूछा—"हे प्रभु! क्या आपके आदि और अंत का कोई व्यक्ति जान सकता है? क्या कोई यह समझ सकता है कि आपकी उत्पत्ति कहाँ से हुई और आप कब तक हैं?"

भगवान रघुनाथजी ने शांत स्वर में उत्तर दिया—"हे पार्वती! मेरा कोई आदि नहीं, न ही कोई अंत है। न तो समय मुझे बाँध सकता है, न ही किसी की बुद्धि मेरी पूर्णता को समझ सकती है। वेदों ने केवल अपनी बुद्धि और अनुभव से अनुमान लगाया है कि मैं अनादि और अनंत हूँ। संसार का प्रत्येक जीव, प्रत्येक अणु मेरे अधीन है। जो कुछ भी प्रकट होता है, वह सब मेरी कृपा और नियोजन का हिस्सा है।"

पार्वती जी ने प्रश्न किया—"हे प्रभु! यदि यह संसार माया और असत्य है, फिर भी यह मनुष्य को दुःख क्यों देता है? वह मनुष्य के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है?"

रघुनाथजी ने उत्तर दिया—"हे पार्वती! संसार माया है, यह सही है। यह क्षणिक और अस्थायी है। फिर भी मनुष्य अपने मोह, इच्छाओं और अहंकार में उलझकर दुःख का अनुभव करता है। यही इच्छाएँ उसे जन्म और मृत्यु के चक्र में फँसाती हैं। जैसे कोई शिशु पानी में खेलते समय चोट खा लेता है, उसी प्रकार संसार के सुख-दुःख व्यक्ति को अनुभव के रूप में प्राप्त होते हैं। परंतु जो व्यक्ति मेरी कृपा, भक्ति और ध्यान में लीन रहता है, वह इन अनुभवों से विचलित नहीं होता। वह समझता है कि हर घटना मेरे नियोजन का हिस्सा है।" माता पार्वती ने कहा—"हे प्रभु! आपकी कृपा से ही भ्रम मिटता है और मनुष्य सही मार्ग देख पाता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति आपके मार्ग पर चलता और आपकी शरण में आता, तो संसार दुःख और अनर्थ का घर न बनता।"

भगवान रघुनाथजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया—"हे पार्वती! जो मनुष्य मुझमें श्रद्धा और भक्ति रखता है, वह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। जो मुझ पर विश्वास करता है, उसका जीवन स्थिर, सुखी और मोक्ष से परिपूर्ण होता है। संसार भले ही भ्रम और दुःख से भरा है, पर मेरी कृपा से प्रत्येक जीव सुरक्षित और स्थिर रह सकता है।"

माता पार्वती ने गहरी शांति का अनुभव किया। उनके मन से भय, मोह और संदेह धीरे-धीरे गायब होने लगे। उन्होंने देखा कि संसार भले ही असत्य और क्षणिक है, लेकिन भगवान की कृपा और शरण से व्यक्ति स्थिर और सुरक्षित रह सकता है। उन्होंने प्रण किया—"हे प्रभु! मैं अपने जीवन में आपके भक्ति और कृपा के मार्ग पर चलूँगी। मैं दूसरों को भी यह ज्ञान दूँगी कि संसार असत्य है, दुःख देता है, परंतु आपकी शरण में सब सुरक्षित है।"

तब से माता पार्वती ने अपने जीवन में यह मार्ग अपनाया। उन्होंने देखा कि हर दुःख, हर कठिनाई और हर असत्य घटना केवल भगवान के नियोजन का हिस्सा है। संसार की माया केवल अनुभव देने के लिए है। जिसने भगवान की शरण ली, उसने भ्रम और दुःख से मुक्ति पाई।

यह कथा हमें यह सिखाती है कि जीवन में जब भी भ्रम और दुःख हमें घेरे, हमें अपने भीतर की दृष्टि को ईश्वर की ओर मोड़ना चाहिए। उनके आशीर्वाद, उनके ज्ञान और उनकी कृपा से ही मनुष्य भ्रम और दुःख से मुक्त हो सकता है। संसार क्षणिक और असत्य है, लेकिन भगवान की शरण में हर जीव स्थिर, सुरक्षित और आनंदित रह सकता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

गुजरात के कच्छ क्षेत्र में बनेगी चार नई रेल लाइन

रु.3375 करोड़ की लागत से बनेगी 194 किमी नई रेल लाइन क्षेत्र का होगा समग्र विकास,दिशा और दशा में आयेगा बदलाव नई इंडस्ट्री और व्यापार का होगा आगमन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के गुजरात राज्य के कच्छ जिले में दो महत्वपूर्ण नई रेल लाइन देशलपर–हाजीपीर–लूना (81.771 किमी) एवं वायोर–लखपत (62.686 किमी) नई ब्रॉडगेज रेल लाइन परियोजनाओं को केंद्रीय मंत्री मण्डल ने स्वीकृति प्रदान की है और भुज-नलिया रेल लाइन का वायोर तक विस्तार एवं नलिया–जखाऊ पोर्ट नई रेल लाइन लगभग 194 किमी रु.3375 करोड़ की लागत से बनाई जाएंगी। सीमावर्ती एवं तटीय क्षेत्रों में रेल संपर्क को सुदृढ़ करने, औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देने तथा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अवसंरचना को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होंगी।

गुजरात का कच्छ क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों और औद्योगिक क्षमता के मामले में देश के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में गिना जाता है। भारत में उत्पादित कुल लाइम स्टोन का लगभग 70 प्रतिशत उत्पादन कच्छ में होता है, जिससे यह क्षेत्र देश की सबसे बड़ी लाइम स्टोन बेल्ट के रूप में पहचाना जाता है। यहाँ मिलने वाला लाइम स्टोन गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है। यह मुख्यतः उच्च ग्रेड का होता है, जिसमें की मात्रा 48–50% तथा SiO की मात्रा 4–6% के बीच पाई जाती है, जो उच्च गुणवत्ता के मानकों को दर्शाती है।

कच्छ में उपलब्ध बेंटोनाइट मिट्टी भी विश्वभर में अपनी उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी खुदाई मुख्य रूप से अबडासा, मांडवी और लखपत तालुकाओं में की जाती है। यहाँ की बेंटोनाइट अपनी उच्च शुद्धता, बेहतर स्वेलिंग क्षमता और कम नमक सामग्री के लिए जानी जाती है। इन विशेषताओं के कारण इसका उपयोग ड्रिलिंग फ्लूइड, कॉस्मेटिक्स, कृषि, वॉटरप्रूफिंग सहित अनेक उद्योगों में किया जाता है। वर्तमान में कच्छ क्षेत्र में 209 बेंटोनाइट खदानें सक्रिय हैं, जहाँ से लगभग 60 मिलियन टन उत्पादन प्रतिवर्ष प्राप्त होता है, जो इसकी औद्योगिक महत्ता को स्पष्ट करता है।

औद्योगिक उत्पादन के साथ-साथ कच्छ क्षेत्र रेलवे के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पश्चिम रेलवे के अंतर्गत यह क्षेत्र सर्वाधिक माल लदान प्रदान करने वाला क्षेत्र है। अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 के बीच यहाँ से औद्योगिक नमक के 1.727 मिलियन मीट्रिक टन, खाद्य नमक के 1.119 मिलियन मीट्रिक टन, तथा कंटेनरों के 10.586 मिलियन मीट्रिक टन का लदान किया गया, जो कच्छ की औद्योगिक क्षमता और लॉजिस्टिक महत्ता को रेखांकित करता है।

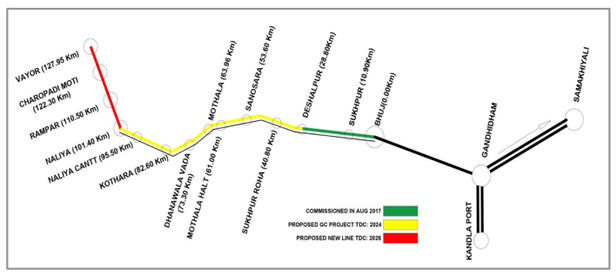

इसके अतिरिक्त, कच्छ का भौगोलिक महत्व भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय तटीय सीमा के निकट स्थित होने के कारण यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील माना जाता है। यहाँ तेज, सुरक्षित और विश्वसनीय परिवहन तंत्र का विकसित होना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। नई रेल लाइनों के निर्माण और उन्नयन से रक्षा बलों की तैनाती, सैन्य सामग्री के परिवहन तथा आपात स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इससे देश की सामरिक शक्ति और सुरक्षा व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी।

इन परियोजनाओं के माध्यम से न केवल औद्योगिक एवं खनिज संपन्न क्षेत्रों को देश के रेल नेटवर्क से जोड़ा जाएगा, बल्कि स्थानीय जनसुविधा और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों को सशक्त आधार मिलेगा।

भुज–नलिया रेल लाइन का वायोर तक विस्तार (24.65 किमी)

भुज - नलिया रेल लाइन (101.40 किमी) का मीटर गेज से ब्रॉड गेज में परिवर्तन कार्य पूर्ण हो चुका है। अब नलिया से वायोर तक (24.65 किमी) रेल लाइन का अनुमानित लागत रु. 437.18 करोड़ से विस्तार का किया जा रहा है। यह प्रस्ताव औद्योगिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रमुख उद्योग जैसे सांघी सीमेंट (सांधीपुरम) इस प्रस्तावित परियोजना मार्ग के समीप प्रस्तावित वायोर स्टेशन के निकट स्थित है। वर्तमान में इस उद्योग का उत्पादन ट्रकों द्वारा भुज तक भेजा जाता है और आगे रेल मार्ग से परिवहन किया जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र में अभी तक रेल सुविधा उपलब्ध नहीं है।

इसके अतिरिक्त, जेपी सीमेंट द्वारा भी वायोर स्टेशन के निकट एक विशाल सीमेंट उत्पादन इकाई स्थापित की जा रही है, जिसका उत्पादन शीघ्र ही प्रारंभ होने की संभावना है। रेल लाइन के इस विस्तार से इन सभी उद्योगों को सीधी रेल कनेक्टिविटी प्राप्त होगी, जिससे कच्चे माल एवं तैयार उत्पादों का परिवहन अधिक सुगम, तेज़ और किफायती हो जाएगा। इससे सड़क यातायात का दबाव कम होगा, लॉजिस्टिक दक्षता में वृद्धि होगी और क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बल मिलेगा।

भुज–नलिया रेल लाइन का वायोर तक विस्तार कच्छ क्षेत्र के औद्योगिक, आर्थिक एवं सामरिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

नलिया–जखाऊ पोर्ट (24.88 किमी) नई ब्रॉडगेज विद्युतीकृत रेल लाइन

नलिया–जखाऊ पोर्ट (24.88 किमी) नई ब्रॉडगेज रेल लाइन, यह रेल लाइन भुज–नलिया खंड के नलिया स्टेशन से प्रारंभ होकर जखाऊ बंदरगाह तक जाएगी। इस परियोजना का उद्देश्य जखाऊ बंदरगाह को रेल नेटवर्क से जोड़ना है, जिससे बंदरगाह की माल ढुलाई क्षमता में वृद्धि होगी तथा मुंद्रा और कांडला जैसे बड़े बंदरगाहों पर बढ़ते दबाव में कमी आएगी। यह बंदरगाह कच्छ जिले के अबडासा तालुका में स्थित है और गुजरात मेरीटाइम बोर्ड द्वारा 2001 में इसका नवीनीकरण किया गया था। जखाऊ बंदरगाह भविष्य में आयात–निर्यात के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित होगा।

इस परियोजना की अनुमानित लागत 410.46 करोड़ है। इस क्षेत्र में विशाल भूमि उपलब्ध है, जिससे औद्योगिक इकाइयाँ, गोदाम, सेवा प्रसंस्करण और पैकेजिंग केंद्र स्थापित करने की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी। वर्तमान में यहा से कोयला, नमक, क्लिंकर और सीमेंट का परिवहन सड़क के माध्यम से होता है जो रेल मार्ग से हो सकेगा। जखाऊ बंदरगाह की स्थिति सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बंदरगाह पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय तटीय सीमा के निकट है। जखाऊ बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय सीमा से 67 किलोमीटर दूर है। नलिया भारतीय वायुसेना की पश्चिमी कमान का एक महत्वपूर्ण वायुसेना स्टेशन है। इस रेल लाइन के बनने से रक्षा दृष्टि से भी देश को एक सशक्त संपर्क मार्ग प्राप्त होगा। यह कांडला और मुंद्रा बंदरगाहों पर भीड़ को भी कम करेगा।

बाल दिवस (14 नवम्बर) के अवसर पर बाल मंदिर एवं किड्स हट के विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण एवं खेल सामग्री वितरण

(जीएनएस)। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर दिनांक 14 नवम्बर 2025 (शुक्रवार) को पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट के विद्यार्थियों को भावनगर परा स्थित रेल म्यूजियम, शहीद स्थल और बाल उद्यान का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों को विभिन्न ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई।

▸▸ शहीद स्थल पर उन्हें इसके निर्माण के उद्देश्य तथा देश के प्रति बलिदान देने वाले वीरों के महत्व से अवगत कराया गया।

▸▸ रेल म्यूजियम में मीटर गेज एवं नैरो गेज के समय के विभिन्न उपकरणों, तकनीकों एवं रेल इतिहास की रोचक जानकारियों से बच्चों को परिचित कराया गया।

▸▸ इसके साथ ही बाल उद्यान में बच्चों ने मनोरंजक गतिविधियों का आनंद लिया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की महिला कल्याण संगठन द्वारा बालकों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए बाल मंदिर और किड्स हट विद्यालयों को खेलकूद की सामग्रियों का वितरण भी किया गया, जिससे बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु प्रोत्साहन मिल सके। इस अवसर पर महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती शालिनी वर्मा, सेक्रेटरी श्रीमती माया त्रिपाठी, ट्रेज़रर श्रीमती वंदना पाटीदार सहित संगठन की अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में ज्ञान के प्रति उत्साह, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति जागरूकता तथा स्वास्थ्यपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण को प्रोत्साहित करना था।

भावनगर रेलवे मंडल के वेरावल स्टेशन के कर्मचारियों द्वारा उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य

(जीएनएस)। दिनांक 13 नवम्बर 2025 की सुबह गडू (शेरबाग) गाँव के दो बालक दिव्य कल्पेशभाई जेठवा और हर्षिल कल्पेशभाई जेठवा, दोनों आयु 12 वर्ष लगभग प्रातः 8:00 बजे लापता हो गए। प्राप्त सूचना के आधार पर संदेह हुआ कि वे प्रातः 10:05 बजे प्रस्थान करने वाली जबलपुर ट्रेन में सवार हो सकते हैं। परिवारजन तुरंत वेरावल रेलवे स्टेशन पहुँचे, जहाँ उनकी मुलाकात श्री अशोक खंडेलवाल (CTI–वेरावल) और श्री रवि चुडासमा (HTC–वेरावल) से हुई। यद्यपि परिवारजन उन दोनों रेलवे कर्मचारियों के लिए पूर्णतः अपरिचित थे, फिर भी दोनों कर्मकारियों ने इस स्थिति को अत्यंत संवेदनशीलता, मानवीयता और समर्पण के साथ संभाला मानो उनके अपने बच्चे गुम हो गए हों।

दोनों कर्मचारी पूरे समय परिवार के साथ रहे और हर संभव सहायता प्रदान करते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने रात 11 बजे तक अपना भोजन भी नहीं किया।

लगभग 11 बजे अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से सूचना मिली कि दोनों बच्चे सुरक्षित मिल गए हैं। परिवार को पूरी राहत मिलने और सुरक्षित जानकारी उपलब्ध होने के बाद ही दोनों कर्मचारी रात देर से अपने घर लौटे।

उक्त बच्चों के परिवार ने वेरावल रेलवे स्टेशन के संपूर्ण स्टाफ, कैमरा चेकिंग विभाग तथा आरपीएफ पुलिस द्वारा प्रदान किए गए सहयोग और समन्वय के लिए आभार व्यक्त किया है। विशेष रूप से श्री अशोक खंडेलवाल (CTI–वेरावल) और श्री रवि चुडासमा (HTC–वेरावल) द्वारा प्रदर्शित त्वरित कार्यवाही, नेतृत्व, संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा के लिए परिवार ने उनके प्रति विशेष सराहना व्यक्त की है।

उनकी तत्पर प्रतिक्रिया, मानवीय दृष्टिकोण और अथक प्रयासों ने परिवार सहित गाँव-समाज को गहराई से प्रभावित किया है। परिवारजन, विशेषकर बच्चों के अभिभावक, रिश्तेदार और सभी संबंधित व्यक्तियों ने वेरावल रेलवे स्टेशन टीम के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की है। कर्मचारी श्री खंडेलवाल और श्री चुडासमा भारतीय रेल के लिए एक मूल्यवान संपत्ति हैं।

बच्चों के परिजनों ने कहा की भारतीय रेलवे द्वारा प्रदर्शित इस उत्कृष्ट सेवा, मानवीय संवेदना और कर्तव्यनिष्ठा की वे सराहना करते हैं। ऐसे कर्मचारी भारतीय रेल को पूरे देश में विश्वास और सेवा का प्रतीक बनाते हैं।

प्रतापनगर स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल के प्रतापनगर स्टेशन को वडोदरा स्टेशन के सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए प्रतापनगर स्टेशन में यार्ड रिमॉडलिंग एवं नॉन इंटरलॉकिंग का कार्य 14 नवंबर, 2025 को पूरा किया गया। इस प्रकार प्रतापनगर स्टेशन से आने वाले दिनों में लम्बी दूरी की मेल एक्सप्रेस ट्रेनों को शुरु किया जा सकेगा, जो ट्रेन परिचालन सहित यात्री सुविधा में अहम होगा।

प्रतापनगर स्टेशन को सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित करने का कार्य वडोदरा मंडल की गति शक्ति यूनिट द्वारा किया गया है। प्रतापनगर स्टेशन विश्वामित्री-दभोई-एकतानगर और दभोई-अलीराजपुर सेक्शन पर स्थित एक एनएसजी-6 स्टेशन है। प्रतापनगर को वडोदरा के एक सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित करने का कार्य वर्ष 2022-23 में कुल 28.93 करोड़ रुपये की लागत से स्वीकृत किया गया था।

अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत इस स्टेशन के उन्नयन/आधुनिकीकरण का कार्य जनवरी, 2026 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। जिसमें यात्रियों के लिए निम्न आधुनिक यात्री सुविधाएँ होंगी :

▸▸ दो उच्च स्तरीय प्लेटफार्मों वाली दो नई पूर्ण-लंबाई वाली लाइनें

▸▸ दूसरे प्रवेश द्वार पर उत्तर दिशा की ओर फसाड (1000 लोगों की क्षमता)

▸▸ दो उच्च स्तरीय प्लेटफार्म

▸▸ दूसरा प्रवेश द्वार और पार्किंग क्षेत्र

▸▸ यात्रियों के लिए दूसरे प्रवेश द्वार पर टिकट बुकिंग काउंटर

▸▸ दूसरे प्रवेश द्वार की ओर सर्विस बिल्डिंग

▸▸ नया महिला प्रतीक्षालय

▸▸ सभी 04 प्लेटफार्म कवर शेड के साथ

▸▸ हाई मास्ट लाइट

▸▸ नए पानी के नल

▸▸ नया पूछताछ कार्यालय

▸▸ प्लेटफार्म पर कोच संकेतक

मंडल रेल अस्पताल, भावनगर में महिला कर्मचारियों के लिए सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की स्थापना

(जीएनएस)। महिला रेल कर्मचारियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए भावनगर रेलवे मंडल द्वारा एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। दिनांक 14 नवंबर 2025 (शुक्रवार) को मंडल रेल अस्पताल, भावनगर में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की स्थापना की गई। यह व्यवस्था महिला कर्मचारियों को कार्यस्थल पर ही सहज, सुरक्षित एवं सम्मानजनक स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की यह वेंडिंग मशीन कर्मचारी हित निधि (SBF) के सौजन्य से स्थापित की गई है। इस अवसर पर सहायक कार्मिक अधिकारी श्री वाई. राधेश्याम जी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साथ ही मुख्य चिकित्सा अधिकारी श्री सुबोध कुमार, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारीगण तथा विभिन्न यूनीयन प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की स्थापना से महिला कर्मचारियों को आकस्मिक परिस्थिति में भी तुरंत एवं स्वच्छता के साथ आवश्यक सुविधाएं प्राप्त होंगी। यह कदम कार्यस्थल पर महिलाओं के स्वास्थ्य सुरक्षा और 'हाइजीनिक वर्क एनवायरमेंट' की दिशा में भावनगर मंडल की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में नर्मदा जिले के डेडियापाड़ा में जनजातीय गौरव दिवस पर राष्ट्रीय स्तर का भव्य समारोह आयोजित

▸▸ **प्रधानमंत्री ने 9700 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की सौगात दी, गुजरात के जनजातीय समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए 2000 करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना लॉन्च की**

▸▸ **जनजातीय समुदाय राष्ट्रीय सम्मान, स्वाभिमान और स्वराज की रक्षा के लिए सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़ा रहा है : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**

▸▸ **प्रधानमंत्री ने बिरसा मुंडा के वंशज श्री सुखराम मुंडा और रवि मुंडा को शॉल और पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी :-

▸▸ जनजातीय युवाओं को मेहनत, परंपरा और काबिलियत विरासत में मिली है

▸▸ हमारी सरकार ने जनजातीय समाज की मिट्टी की महक, परंपरा, पुरुषार्थ और भावी आकांक्षाओं को एक सूत्र में जोड़कर जनजातीय गौरव को पुनः उजागर करने का बीड़ा उठाया है

▸▸ 2014 से पहले भगवान बिरसा मुंडा और उनके योगदान को भुला दिया गया था : इस सरकार ने जनजातीय जननायकों को उचित सम्मान दिया

▸▸ सिकल सेल रोग का सामना करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का अभियान छेड़ा है : अब तक देश के छह करोड़ जनजातीय नागरिकों की सिकल सेल हेल्थ स्क्रीनिंग पूरी हो चुकी है

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ देश भर में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाकर प्रधानमंत्री ने उन्हें सच्चे अर्थ में सम्मान दिया

▸▸ 'हमारा देश, हमारा राज' सूत्र की प्रेरणा के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विजन 'आत्मनिर्भर-विकसित भारत' के संकल्प के रूप में चरितार्थ हो रहा है

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को नर्मदा जिले के डेडियापाड़ा में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस के भव्य एवं गौरवशाली समारोह में धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर भाववंदना करते हुए कहा कि जनजातीय समुदाय देश के सम्मान, स्वाभिमान और स्वराज की रक्षा के लिए सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़ा रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई, जल, जंगल और जमीन के अधिकारों की रक्षा तथा जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए जन-जन में चेतना जगाने वाले धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती को यादगार बनाने और जनजातीय नायकों के शौर्य तथा अमूल्य योगदान को सम्मान देने के लिए 2025 का वर्ष देश भर में जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में कुल 9700 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की सौगात दी। प्रधानमंत्री ने गुजरात के जनजातीय समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए 2000 करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना भी लॉन्च की।

प्रधानमंत्री ने सतपुड़ा पर्वतमाला में स्थित देवमोगरा धाम में जनजातियों की आराध्य याहा मोगी पांडोरी माता के

दर्शन और पूजा-अर्चना कर धन्यता का अनुभव किया। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ खुली जीप में सवार होकर सभामंडप में मौजूद जनसमूह के बीच से गुजरते हुए जनजातीय बंधुओं का अभिवादन स्वीकार किया।

प्रधानमंत्री ने विशाल जनजातीय समुदाय को संबोधित करते हुए आगे कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के शुभ अवसर पर हमें 'सबका साथ, सबका विकास' मंत्र को मजबूत बनाने का संकल्प लेना है। यह वही जनमंत्र है जिससे 'विकास में कोई पीछे न रहे और कोई विकास से वंचित भी न रहे' की भावना के साथ सरकार ने जनजातियों के उत्कर्ष की राह चुनी है।

आजादी की लड़ाई और देश के विकास में जनजातियों के योगदान की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने अतीत की सरकारों द्वारा जनजातीय समुदाय के प्रति बरती गई उपेक्षा की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि छह दशकों तक देश पर शासन करने वाले विपक्ष द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की निरंतर उपेक्षा की गई। इतना ही नहीं, जनजातियों के साथ अन्याय किया गया और उन्हें विकास की मुख्यधारा में शामिल करने के बदले हाशिये पर धकेल दिया गया।

प्रधानमंत्री ने जनजातीय बंधुओं को उनकी सरकार द्वारा दिए गए गौरव और सम्मान के संदर्भ में कहा कि सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आर्थिक विकास के क्षेत्र में अनेक योजनाएं लागू कर जनजातीय समाज के उत्थान और विकास की प्रतिबद्धता दिखाई है।

उन्होंने कहा कि पीएम जनमन योजना के अंतर्गत अति पिछड़े जनजातियों के लिए 24,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है। पीएम जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत देश के लगभग 60,000 गांव लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी सरकार ने अति पिछड़े जनजातीय जिलों को आकांक्षी जिलों के रूप में चिन्हित कर अधिक बजट आवंटन के जरिए सर्वांगीण विकास की दिशा में प्रेरित किया है।

उन्होंने कहा कि लघु वनोपजों की संख्या 20 से बढ़ाकर 100 कर दी गई है। इसके अलावा, वनोपजों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) भी बढ़ा दिया गया है और जनजातीय विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर कर राज्य और केंद्र सरकार साथ मिलकर निरंतर कर्तव्यरत है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जनजातीय समुदाय में पाई जाने वाली खतरनाक सिकल सेल बीमारी का सामना करने के लिए राष्ट्रीय स्तर का अभियान चलाया है। इसके अलावा, जनजातीय क्षेत्रों में डिस्पेंसरी, चिकित्सा केंद्रों और अस्पतालों की संख्या बढ़ाई गई है। इसके परिणामस्वरूप अब तक देश के छह करोड़ जनजातीय नागरिकों की हेल्थ स्क्रीनिंग हो चुकी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जनजातियों के इतिहास, कला, संस्कृति और प्राचीन भाषा को पुनर्जीवित करने के लिए बिरसा मुंडा आदिजाति यूनिवर्सिटी में जनजातीय भाषा संवर्धन केंद्र के लिए श्री गोविंद गुरु पीठ की भी स्थापना की है, जहां भील, गामित, वसावा, गरासिया, कोंकणी, संथाल, राठवा, नायक, दबला, चौधरी, कोंकणा, कुंभी, वारली और ढोडिया आदि सभी जातियों की बोलियों का अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत जनजातीय गाथाओं, लोक काव्यों, लोक कहानियों और प्राचीन गीतों का संग्रह और संरक्षण किया जाएगा। उन्होंने हजारों वर्षों से चली आ रही जनजातीय कला और संस्कृति का गौरवगान करने और उसे भारतीय चेतना का अभिन्न हिस्सा बनाने के सरकार के प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी।

प्रधानमंत्री ने जनजातीय क्षेत्रों में अतीत की विकट स्थिति की याद ताजा करते हुए कहा कि दो दशक पहले अंबाजी से उमरगाम तक के जनजातीय पट्टे में एक भी साइंस कॉलेज नहीं था, जबकि गत दो दशकों में दो दर्जन साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज शुरू हुए हैं। इन क्षेत्रों में शिक्षा, सुविधाओं, योजनाओं और आर्थिक गतिविधियों का दायरा लगातार बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने गुजरात में वनबंधु कल्याण योजना का दायरा बढ़ाकर अंबाजी से उमरगाम तक के जनजातीय बेल्ट तक विकास के फल पहुंचाने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व की सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की भाववंदना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आदिवासी समाज के वीरों को सम्मान देकर भव्य इतिहास को पुनर्जीवित कर लोगों के समक्ष रखा और 'विकास भी, विरासत भी' को साकार किया है।

श्री पटेल ने कहा कि देश को स्वतंत्रता दिलाने में बड़ा योगदान देने वाले जनजातियों के आराध्य भगवान बिरसा मुंडा तथा अनेक जनजातीय वीर शहीदों का भव्य इतिहास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दशकों तक उपेक्षित था। उन्हें सम्मान दिलाने कार्य प्रधानमंत्री ने किया है। प्रधानमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी की जयंती 15 नवंबर को देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की परंपरा का सूत्रपात किया है।

मानगढ़ क्रांति के संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि मानगढ़ क्रांति संग्राम के सेनानी गोविंद गुरु तथा भील बांधवों की स्मृति में गोविंद गुरु स्मृति वन का मानगढ़ में प्रधानमंत्री की प्रेरणा से निर्माण हुआ है। प्रधानमंत्री ने अंग्रेजों के दमन का शिकार हुए 1200 जनजाति बंधुओं का स्मारक भी साबरकांठा के पाल-दढवाव में स्थापित कर उन अमर शहीदों का इतिहास लोगों के समक्ष रखा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने ऐसी भव्य विरासत को संजोए बैठे जनजातीय समाज को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए अनेक सफल आयाम पूरे किए हैं। उन्होंने ही उमरगाम से अंबाजी तक के संपूर्ण जनजातीय पट्टे के सर्वग्राही विकास के लिए वनबंधु कल्याण योजना शुरू कराई थी।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि देश में प्रधानमंत्री जनजाति दिवस न्याय महाअभियान-पीएम जनमन के लिए 24 हजार करोड़ रुपए का मिशन शुरू हुआ है। गुजरात ने प्रधानमंत्री की हर योजना के क्रियान्वयन में अग्रसर रहने की प्राप्त की गई उपलब्धियों को इस पीएम जनमन में भी बनाए रखा है। मुख्यमंत्री ने विशेष कमजोर आदिम समूहों को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) अंतर्गत आवास आवंटन में गुजरात द्वारा देश में बेस्ट परफॉर्मर स्टेट का पुरस्कार प्राप्त किए जाने पर गौरव व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान प्रारंभ कराया है। गुजरात में इस अभियान में 21 जिलों में 700 से अधिक सेवा शिविर आयोजित कर 5 लाख से अधिक जनजातीय लोगों को समाविष्ट किया गया है और लगभग 22 विकासोन्मुखी योजनाओं का लाभ 1 लाख से अधिक जनजातीय बंधुओं को दिया है।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जनजातीय क्षेत्रों में एक समय विज्ञान संकाय के स्कूल नहीं थे, परंतु आज प्रधानमंत्री के दिशादर्शन में जनजातीय क्षेत्रों में 12 साइंस कॉलेज, 2 यूनिवर्सिटी और 11 मेडिकल कॉलेज होने के कारण जनजातीय परिवारों की संतानें डॉक्टर-इंजीनियर बनने लगी हैं। उन्होंने जोड़ा कि जनजातीय समुदायों की स्वास्थ्य सुख-सुविधा को और अधिक सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री की प्रेरणा से गुजरात जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट शुरू करने वाला देश का प्रथम राज्य बना है।

मुख्यमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा तथा जनजातीय समाज के योगदान को लोगों तक पहुंचाने के लिए राज्य में 7 से 13 नवंबर के दौरान जनजातीय गौरव रथयात्रा के आयोजन की सफलता का भी वर्णन किया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिरसा मुंडा के वंशजों श्री सुखराम मुंडा व श्री रवि मुंडा को शॉल ओढ़ाकर तथा पुष्पगुच्छ अर्पित कर सम्मानित किया।

जनजाति कल्याण योजनाओं के लाभार्थियों ने सरकारी योजनागत सहायता से जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन के अनुभवों का प्रधानमंत्री के समक्ष वर्णन किया।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने गुजरात एसटी निगम की भगवान बिरसा मुंडा जनजातीय परिवहन बसों को हरी झंडी दिखाकर प्रस्थान कराया।

प्रधानमंत्री ने मंच पर भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा को पुष्पांजलि अर्पित कर उनकी भाववंदना की। प्रधानमंत्री को जनजाति समुदाय के प्रतीक समान कोटी, कड़ा और गमछा अर्पित कर उनका स्वागत किया गया। सभी उपस्थितों ने जनजाति विकास को प्रस्तुत करने वाली शॉर्ट वीडियो फिल्म देखी।

इस अवसर पर राज्य के आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल, खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियां राज्य मंत्री डॉ. जयरामभाई गामित, प्रदेश संगठन अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, सांसद श्री मनसुखभाई वसावा, विधायक श्रीमती दर्शनाबेन देशमुख, आदिजाति विकास विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती शाहमीना हुसैन, जनजाति विभाग के निदेशक श्री आशिष कुमार, जिला कलेक्टर श्री एस. के. मोदी, जिला पुलिस अधीक्षक सुश्री विशाखा डबराल, पदाधिकारी, जिला प्रशासन के अधिकारी और बड़ी संख्या में जनजातीय नागरिक उपस्थित रहे।

34 दिन बाद कब्र से निकाला गया शव; हाईकोर्ट के हस्तक्षेप पर बदली विवादित जमीन

(जीएनएस)। पुरुलिया। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया-1 ब्लॉक के चकदा क्षेत्र में एक पुराना भूमि–विवाद शनिवार को उस समय फिर सुर्खियों में आ गया, जब 34 दिन पहले दफनाई गई एक महिला का शव अदालत के आदेश पर कब्र से बाहर निकाला गया और दूसरी जगह ले जाकर पुनः दफनाया गया। यह दुर्लभ घटना न केवल स्थानीय प्रशासन बल्कि पूरे इलाके के लिए संवेदनशील माहौल लेकर आई, क्योंकि यह विवाद वर्षों से दो समुदायों के बीच तनाव का कारण रहा है।

जिस जमीन को लेकर यह टकराव खड़ा हुआ है, उसे ग्रामीण लगभग दो सदियों से कब्रिस्तान के रूप में जानते हैं। स्थानीय मुस्लिम समुदाय का कहना है कि यह स्थान उनके पूर्वजों के ज़माने से दफन के लिए इस्तेमाल होता आया है और पीढ़ियों की यादें इससे जुड़ी हुई हैं। दूसरी ओर, उसी भूमि पर बने एक आश्रम का प्रबंधन दावा करता रहा है कि यह पूरी जमीन उनकी निजी संपत्ति है, और ग्रामीण इसे केवल पारंपरिक सुविधा के तौर पर उपयोग करते रहे हैं। दस्तावेज़ों की कमी और ऐतिहासिक परंपरा ने मिलकर इस विवाद को गहराई दी है, जो समय-समय पर तनाव का कारण बनता रहा है।

मामला तब गंभीर हुआ जब 12 अक्टूबर को समीरन अंसारी नामक महिला की मृत्यु के बाद उनके परिजनों ने पुरानी परंपरा के अनुसार उसी जमीन पर उन्हें सुपुर्द-ए-खाक कर दिया। आश्रम प्रबंधन ने तुरंत इसका विरोध किया और पुलिस तथा जिला अधिकारियों को लिखित शिकायत सौंपी। विवाद बढ़ता गया और मामला कोलकाता हाई कोर्ट की चौखट तक पहुंच गया। अदालत ने शिकायतों को संज्ञान में लेते हुए प्रशासन को शव को निकालकर वैकल्पिक स्थान पर दफनाने का आदेश दिया।

शनिवार सुबह संवेदनशील माहौल में पूरी प्रक्रिया शुरू हुई। प्रशासन, पुलिस, स्वास्थ्य अधिकारी और कोर्ट द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक मौके पर मौजूद रहे। निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत कब्र को सावधानी से खोला गया और लगभग साढ़े चार सप्ताह से दफन महिला का शव सुरक्षित तरीके से एंबुलेंस में ले जाया गया। इसके बाद उसे क्षेत्र से दूर एक नए स्थान पर पुनः दफनाया गया। उपस्थित ग्रामीणों के लिए यह दृश्य भावनात्मक और तनावपूर्ण दोनों रहा, क्योंकि दफन की गई जगह को खोलना उनके धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं से गहराई से जुड़ा मामला है।

मृतका के बेटे रहमान अंसारी ने प्रशासन और आश्रम प्रबंधन दोनों पर नाराज़गी जाहिर की। उनका कहना है कि यह जमीन 200 वर्ष से कब्रिस्तान रही है और उनके परिवार, रिश्तेदारों और गांव के अनेक लोगों को इसी स्थान पर दफनाया गया है। “इस बार केवल विरोध के कारण हमें परेशान किया गया,” उन्होंने कहा। मस्जिद समिति ने भी यही दावा दोहराया कि जमीन उन्हें अतीत में दान की गई थी, लेकिन लिखित दस्तावेज़ों के अभाव ने विवाद को फिर जन्म दे दिया।

उधर, आश्रम प्रबंधक राजेंद्र प्रसाद चट्टोपाध्याय का कहना है कि उन्होंने शुरू से ही पुलिस और जिला प्रशासन को इसकी संवेदनशीलता बताई थी, लेकिन कार्रवाई देर से होने के कारण मामला अदालत तक पहुंचना पड़ा। उन्होंने कहा कि भूमि उनकी है और उसका धार्मिक उपयोग केवल “रिवाजनुसार” रहा है, जिसे अब कानूनी रूप से तय होना आवश्यक है।

फिलहाल, हाई कोर्ट के आदेश पर शव का पुनः दफन तो पूरा हो गया है, लेकिन जमीन की वास्तविक कानूनी स्थिति को लेकर दोनों पक्ष अपने दावे पर अडिग हैं। अदालत में जल्द सुनवाई की उम्मीद है, पर ग्रामीणों और आश्रम के बीच तनाव कम होने का संकेत अभी दूर दिखाई देता है। स्थानीय प्रशासन ने क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए पुलिस गश्त बढ़ा दी है और दोनों पक्षों से संयम बरतने की अपील की है।

दफनाई गई महिला का शव 34 दिन बाद कब्र से निकलना शायद एक व्यक्तिगत घटना हो, लेकिन यह उस गहरे सामाजिक और ऐतिहासिक विवाद का प्रतीक बन गया है जिसने एक पूरी जमीन को संवेदनशील संघर्ष का केंद्र बना दिया है।

गैंगस्टरों पर सख्ती में नाकामी: अमृतसर देहात के SSP मनिंदर सिंह निलंबित

(जीएनएस)। पंजाब में बढ़ते गैंगस्टर नेटवर्क, जबरन वसूली और फायरिंग की लगातार आती घटनाओं के बीच आखिरकार भगवंत मान सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। अमृतसर (ग्रामीण) के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (SSP) मनिंदर सिंह को गैंगस्टरों के खिलाफ प्रभावी और सख्त कार्रवाई करने में नाकाम रहने के आरोप में निलंबित कर दिया गया। यह फैसला ऐसे समय में सामने आया है जब तरनतारन उपचुनाव में कानून-व्यवस्था सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बन चुका है और विपक्ष लगातार सरकार की आलोचना कर रहा है।

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने साफ़ कहा कि पंजाब में गैंगस्टरवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने चेतावनी भरे स्वर में कहा कि कोई भी अधिकारी यदि अपराधियों के खिलाफ ढिलाई बरतता पाया गया, तो उसके खिलाफ तुरंत सख्त कदम उठाए जाएंगे। मान सरकार पर विपक्ष की लगातार आने वाली आलोचनाओं ने इस कार्रवाई को और भी राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बना दिया है।

मनिंदर सिंह 2019 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं और इस वर्ष फरवरी में उन्हें अमृतसर ग्रामीण का SSP नियुक्त किया गया था। इससे पहले वह अमृतसर कमिश्नरेट में एसीपी तथा तरनतारन में पुलिस अधीक्षक

जैसे पदों पर कार्यरत रह चुके हैं। प्रशासनिक अनुभव के बावजूद, सरकार का मानना है कि उनके नेतृत्व में अमृतसर ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ती आपराधिक गतिविधियों पर नियंत्रण नहीं हो पाया।

इस निलंबन का एक बड़ा कारण 6 नवंबर को जंडियाला गुरु में हुई गोलीबारी की वह घटना भी है, जिसने पूरे पुलिस तंत्र की नाकामी को उजागर किया था। तीन अज्ञात बाइक सवार अपराधियों ने एक प्रोविजनल स्टोर पर जबरन वसूली के इरादे से गोलियां चलाई थीं। जांच में सामने आया कि आरोपी कुख्यात गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया गिरोह से जुड़े थे और विदेश में बैठे अपने आकाओं के निर्देश पर काम कर रहे थे। घटना ने न सिर्फ ग्रामीण अमृतसर में दहशत फैलाई, बल्कि चुनावी माहौल में सरकार की मुश्किलें भी बढ़ा दीं।

हालांकि इस घटना के दो आरोपियों को पुलिस ने दो दिन बाद गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन सवाल उठने लगे कि गैंगस्टर कैसे खुलेआम फायरिंग कर रहे हैं, जबकि सरकार दावा कर रही है कि प्रदेश गैंगस्टरों से मुक्त किया जा रहा है।

उधर, तरनतारन उपचुनाव में कानून-व्यवस्था एक प्रमुख मुद्दा बन चुका है। प्रचार अभियान के दौरान आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने राज्य को गैंगस्टरों से पूरी तरह मुक्त करने का संकल्प दोहराया था। उन्होंने कहा था कि जो अपराधी पंजाब में पनप रहे हैं, उन्हें एक सप्ताह के भीतर राज्य छोड़ना होगा, अन्यथा सख्त कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा।

इस बीच यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले ही सप्ताह चुनाव आयोग ने तरनतारन की एसएसपी रवजोत कौर ग्रेवाल को निलंबित कर दिया था। यह कार्रवाई शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल की शिकायत के बाद की गई। बादल ने आरोप लगाया था कि ग्रेवाल ने उनकी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के खिलाफ राजनीति से प्रेरित होकर झूठी FIR दर्ज की हैं। चुनाव आयोग ने मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस महानिदेशक को शिकायत की जांच के लिए वरिष्ठ स्तर के अधिकारी को नियुक्त करने का निर्देश दिया।

रांची में दर्दनाक हादसा: धुर्वा डैम में समा गई स्विफ्ट डिजायर, तीन पुलिसकर्मियों की मौत से सनसनी

(जीएनएस)। रांची। राजधानी रांची के धुर्वा डैम में शुक्रवार देर रात हुए एक भीषण सड़क हादसे ने पूरे शहर को दहलाकर रख दिया। प्रिंसिपल जिला जज के दो बॉडीगार्ड और सरकारी ड्राइवर की तेज रफ्तार स्विफ्ट डिजायर कार अनियंत्रित होकर करीब 30 फीट नीचे डैम में जा गिरी, जिससे तीनों की मौत मौके पर ही हो गई। शनिवार सुबह जब डैम से शव बाहर निकाले गए, तो पूरे प्रशासन में हड़कंप मच गया। पुलिस ने कार और हथियार बरामद कर जांच शुरू कर दी है।

देर रात का वह भयावह पल धुर्वा डैम के आसपास रहने वाले स्थानीय लोगों ने भी महसूस किया। उन्होंने बताया कि अचानक एक कार तेज रफ्तार से आती दिखी, जो टर्निंग प्वाइंट पर असंतुलित हो गई और बिना रुके सीधे नीचे पानी में जा धंसी। अंधेरा होने और इलाके में कम आवाजाही की वजह से तुरंत मदद नहीं मिल पाई। हादसा उस मोड़ पर हुआ जो पहले से ही खतरनाक माना जाता है, लेकिन सुरक्षा उपायों के अभाव ने स्थिति को और भी भयावह बना दिया।

शनिवार सुबह घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों और गोताखोरों की मदद से लगभग तीन घंटे की मेहनत के बाद दुर्घटनाग्रस्त कार को डैम से बाहर निकाला। कार के अंदर तीनों पुलिसकर्मियों के शव मिले, जिनकी पहचान उपेंद्र कुमार सिंह, रोबिन कुजूर और सतेंद्र सिंह के रूप में की गई। तीनों जमशेदपुर के प्रिंसिपल जिला जज के सुरक्षा दल में तैनात थे। बरामद हथियार भी कार के अंदर डूबे हुए पाए गए, जिन्हें सुरक्षित कब्जे में लिया गया है।

धुर्वा और नगड़ी थाना की पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स अस्पताल भेज दिया है। रांची पुलिस इस हादसे की हर पहलू से जांच कर रही है—कार की गति कितनी थी, मोड़ पर बैलेंस कैसे बिगड़ा, क्या सड़क पर फिसलन थी, या फिर ड्राइवर की असावधानी की वजह से यह त्रासदी घटी।

इस दुर्घटना ने धुर्वा डैम की सुरक्षा पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। कुछ दिन पहले ही इसी डैम में नहाने के दौरान एक युवक की डूबने से मौत हुई थी, जिसके बाद सुरक्षा इंतजाम बढ़ाने की मांग उठी थी। लेकिन शुक्रवार की रात हुआ यह हादसा साफ बता रहा है कि डैम के आसपास सुरक्षा उपाय अभी भी नाकाफी हैं।

रांची पुलिस अब सीसीटीवी फुटेज, वाहन की तकनीकी जांच और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर पूरी घटना की सच्चाई सामने लाने की कोशिश में जुटी है।

18 दिन तक VIP ठाठ में रहा फर्जी विधायक, आगरा पुलिस ने दबोचा; मुफ्त में होटल और खाना उड़ाता था दिल्ली का युवक

(जीएनएस)। आगरा। सदर क्षेत्र के एक होटल में पिछले 18 दिनों से VIP रुतबे का आनंद ले रहा एक युवक आखिरकार पुलिस के हत्थे चढ़ गया। युवक खुद को आगरा का विधायक बताकर न केवल मुफ्त में होटल में ठहरा हुआ था, बल्कि आस-पड़ोस के रेस्टोरेंट्स से बिना पैसे चुकाए खाने-पीने का सामान भी मंगवा रहा था। बीजेपी झंडे, स्कॉर्पियो पर 'राज्यसभा सांसद' का बोर्ड और रसूख भरा रवैया—इन सबकी आड़ में वह शहर में धौंस जमाता फिर रहा था। लेकिन शनिवार को मामला आला अधिकारियों तक पहुंचने पर उसकी असलियत उजागर हो गई। यह विचित्र घटना सदर स्थित होटल पवन से शुरू हुई, जहां यह युवक 29 अक्टूबर को दिल्ली नंबर की स्कॉर्पियो कार लेकर पहुंचा

था। उसने अपना परिचय 'विधायक विनोद कुमार' के रूप में दिया और तुरंत कमरा दिलवा लिया। होटल मालिक के अनुसार, युवक ने कमरे पर कब्जा कर लिया और 18 दिनों में एक बार भी किराया नहीं चुकाया। उल्टा वह आसपास की दुकानों व रेस्टोरेंट से तरह-तरह के भोजन ऑर्डर करता रहा और बिल चुकाने से साफ इनकार कर देता था। होटल कारोबारी शुरू में उसके राजनीतिक दावों से सहम गए और किसी विवाद से बचने के लिए चुप रहे, लेकिन उसकी मांगें और दबाव दिन-प्रतिदिन बढ़ते गए।

मामले ने तब और गंभीर रूप ले लिया जब यह युवक एकलव्य स्पोर्ट्स स्टेडियम में VIP मेहमान बनकर पहुंच गया। उसने स्टेडियम कर्मचारियों को धमकाया और कहा कि वे उसके लिए अलग से व्यवस्थाएं करें क्योंकि अब वह रोज वहीं क्रिकेट खेलने आएगा। इतना ही नहीं, अपनी धौंस जमाने के लिए उसने एक वीडियो भी रिकॉर्ड कराया जिसमें वह खुद को 'आगरा विधायक' बताकर सोशल मीडिया पर प्रचारित करता रहा। पीड़ित होटल स्वामी ने आखिरकार सौदागर लेन पुलिस चौकी में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस मौके पर पहुंची, मगर कार पर लगे बीजेपी झंडे और 'राज्यसभा सांसद' के बोर्ड को देखकर वे खुद दुविधा में पड़ गए। कथित विधायक ने पुलिस के सामने भी रौब दिखाते हुए कहा कि वह "सरकारी काम से आया है और 1 दिसंबर तक यहीं रहेगा," जिसके चलते पुलिस तुरंत कार्रवाई करने से हिचकती रही।

पश्चिम रेलवे द्वारा उधना और ब्रह्मपुर के बीच अमृत भारत एक्सप्रेस की फ्रीक्वेंसी में वृद्धि

(जीएनएस)। अमृतभारत एक्सप्रेस, भारतीय रेल की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य लंबी दूरी के यात्रियों को किफायती किराए पर आधुनिक, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा सुविधाएँ प्रदान करना है। यात्री-केंद्रित उपायों के क्रम में ट्रेन संख्या 19021/19022 उधना-ब्रह्मपुर अमृत भारत एक्सप्रेस की फ्रीक्वेंसी अब साप्ताहिक से बढ़ाकर त्रि-साप्ताहिक की जा रही है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 19021/19022 उधना–ब्रह्मपुर अमृत भारत एक्सप्रेस (त्रि-साप्ताहिक):

ट्रेन संख्या 19021 उधना–ब्रह्मपुर अमृत भारत एक्सप्रेस, जो पहले प्रत्येक रविवार को चलती थी, अब 19 नवंबर, 2025 से रविवार, बुधवार और शुक्रवार को चलेगी। यह ट्रेन उधना से 07:10 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन दोपहर 13:55 बजे ब्रह्मपुर पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 19022 ब्रह्मपुर–उधना अमृत भारत एक्सप्रेस, जो पहले प्रत्येक सोमवार को चलती थी, अब 20 नवंबर, 2025 से सोमवार, गुरुवार और शनिवार को चलेगी। यह ट्रेन ब्रह्मपुर से 23:45 बजे प्रस्थान करेगी और तीसरे दिन 08:45 बजे उधना पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बारडोली, व्यारा, नवापुर, नंदुरबार, दोंडाइचा, सिंदखेड़ा, अमलनेर, धरनगांव, जलगांव, भुसावल, मलकापुर, अकोला, बडनेरा, वर्धा, नागपुर, गोंदिया, दुर्ग, रायपुर, महासमुंद, खरियार रोड, कांटाबांजी, टिटलागढ़, केसिंगा, मुनिगुडा, रायगडा, पार्वतीपुरम, बोब्बिली, विजयनगरम, श्रीकाकुलम रोड और पलासा स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच हैं।

ट्रेन संख्या 19021 के विस्तारित फ्रीक्वेंसी की बुकिंग 16 नवंबर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी।

सोनभद्र में योगी का संदेश: 'आदिवासियों का समग्र विकास सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता', बिरसा मुंडा जयंती पर योजनाओं की बड़ी घोषणाएँ

(जीएनएस)। सोनभद्र की सुबह सोमवार को एक विशेष ऊर्जा से भरी हुई थी। जिले के चोपन में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर जुटी हजारों लोगों की भीड़ ने पूरे वातावरण को उत्सव की तरह जीवंत बना दिया। मंच पर जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहुंचे, तो तालियों की गूंज ने इस बात का संकेत दे दिया कि यह कार्यक्रम केवल एक समारोह नहीं, बल्कि जनजातीय समाज के अधिकारों और उनके विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक बनने वाला है। मुख्यमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा को नमन करते हुए कहा कि स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासी समाज की पहचान की लड़ाई में उनका योगदान किसी युगपुरुष से कम नहीं था। उन्होंने याद दिलाया कि केवल 25 वर्ष की अल्प आयु में ही बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के अत्याचारों को चुनौती देकर पूरे जनजातीय समाज को जगाने का कार्य किया और ब्रिटिश शासन को उनके अधिकार मानने पर मजबूर कर दिया।

योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्बोधन में बताया कि आज जनजातीय समाज तेजी से विकास की मुख्यधारा में जुड़ रहा है और इसका बड़ा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संचालित योजनाओं को जाता है। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में 'जनजातीय गौरव पखवाड़ा' मनाया जा रहा है, जिसमें सांस्कृतिक विरासत, अधिकारों और विकास से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि बलरामपुर में स्थापित जनजातीय संग्रहालय की तर्ज पर अब विंध्याचल मंडल में भी एक भव्य जनजातीय संग्रहालय बनाया जाएगा, जो आदिवासी समाज की परंपराओं, संघर्ष और विरासत को संरक्षित करेगा।

मुख्यमंत्री ने सोनभद्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि सलखन जीवाश्म पार्क और शिवद्वार मंदिर जैसे स्थान जिले की अनोखी पहचान हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तर प्रदेश में कुल 15 मान्यता प्राप्त जनजातियाँ हैं, और इनमें से 14 केवल सोनभद्र जिले में निवास करती हैं—यह देश के किसी भी एक जिले में जनजातियों की सबसे अधिक उपस्थिति है।

योगी ने कहा कि यह जिला अपनी विविधता, परंपरा और ऐतिहासिक महत्व के कारण राज्य का गौरव है।

योगी आदित्यनाथ ने बताया कि 'पीएम जनमन योजना' के तहत प्रदेश के 517 जनजातीय बहुल गांवों में अभूतपूर्व विकास कार्य किए जा रहे हैं। सड़क, शिक्षा, पेयजल, बिजली, स्वास्थ्य और संचार जैसी बुनियादी सुविधाओं का तेजी से विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वनाधिकार कानून में सुधार के बाद अब तक 23,000 से अधिक भूमि पट्टे आदिवासी परिवारों को प्रदान किए जा चुके हैं, जिससे उन्हें स्थायी आजीविका और सुरक्षा का मार्ग मिल रहा है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने 548 करोड़ रुपये की 432 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इनमें सड़क निर्माण, स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, पेयजल योजनाएँ, विद्युत आपूर्ति सुधार और सामाजिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने वाले अनेक कार्य शामिल थे।

साबरमती-हरिद्वार द्वि साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती स्पेशल परिवर्तित मार्ग से चलेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए साबरमती-हरिद्वार द्वि साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। उत्तर पश्चिम रेलवे के जयपुर स्टेशन पर रिडवलवमेंट कार्य हेतु मेगा ब्लॉक के चलते ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती परिवर्तित मार्ग से चलेगी। विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09425 साबरमती-हरिद्वार स्पेशल को 29 नवंबर 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती स्पेशल को 30 नवंबर 2025 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती स्पेशल 30 नवंबर 2025 तक निर्धारित मार्ग रेवाड़ी-अलवर-जयपुर-फुलेरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-नारनौल-रींगस-फुलेरा के रास्ते चलेगी। परिवर्तित मार्ग के दौरान यह ट्रेन अटेली, नारनौल, नीम का थाना, रींगस और फुलेरा स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव करेगी।

ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

बेंगलुरु में फर्जी सॉफ्टवेयर कंपनी पर बड़ी कार्रवाई अमेरिकी नागरिकों को ठगने के आरोप में 21 गिरफ्तार

(जीएनएस)। बेंगलुरु। शहर में आईटी हब की आड़ में संचालित एक बड़े साइबर फर्जीवाड़े का भंडाफोड़ करते हुए साइबर पुलिस ने व्हाइटफील्ड स्थित एक कथित सॉफ्टवेयर कंपनी 'मस्क कम्युनिकेशंस' पर छापा मारकर 21 कर्मचारियों को गिरफ्तार किया है। यह कंपनी खुद को माइक्रोसॉफ्ट के टेक्निकल सपोर्ट स्टाफ के रूप में पेश कर अमेरिका के नागरिकों को निशाना बनाकर ठगी कर रही थी। पुलिस का कहना है कि यह कंपनी शुरुआत से ही धोखाधड़ी के उद्देश्य से चलाई जा रही थी और विदेशी नागरिकों के सिस्टम में "टेक सपोर्ट" के नाम पर हस्तक्षेप करके उनसे मोटी रकम ऐंठी जाती थी। कंपनी करीब 4,500 वर्गफीट के ऑफिस से ऑपरेट हो रही थी और अगस्त 2025 से सक्रिय थी। धीरे-धीरे इसने एक संगठित नेटवर्क तैयार किया, जो अमेरिकी नागरिकों को तकनीकी समस्या का हवाला देकर उनसे भुगतान वसूलता था।

दो दिन तक चला ऑपरेशन

साइबर कमांड की स्पेशल सेल और व्हाइटफील्ड साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन की संयुक्त टीम ने कोर्ट से सर्च वारंट लेकर शुक्रवार और शनिवार को ऑफिस में दो दिन तक छापेमारी की। यह पूरा अभियान डीजीपी डॉ. प्रोनब मोहंती के निर्देशन में संचालित हुआ। पुलिस का कहना है कि छापे के दौरान मिले 21 कर्मचारियों के सीधे ठगी में शामिल होने के पर्याप्त सबूत मिले, जिसके बाद उन्हें मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया।

इलेक्ट्रॉनिक सबूतों का बड़ा जखीरा मिला

छानबीन के दौरान पुलिस ने ऑफिस से कई कंप्यूटर, डिजिटल गैजेट्स, मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सबूत जब्त किए। टीम ने पूरी रात तलाशी की, जो 15 नवंबर की सुबह 11 बजे तक जारी रही। शुरुआती जांच में सामने आया कि आरोपी माइक्रोसॉफ्ट टेक्निकल सपोर्ट का झूठा परिचय देते थे और विदेशी नागरिकों के सिस्टम में दूरस्थ एक्सेस लेकर "फर्जी समस्याएं" दिखाकर उनसे मोटी रकम वसूलते थे।

मुख्य आरोपियों की तलाश जारी

छापेमारी के दौरान इस गिरोह के कुछ सदस्य फरार हो गए। पुलिस अब उनकी तलाश में संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है। जब्त किए गए डिजिटल सबूतों की फॉरेंसिक जांच जारी है, ताकि पीड़ितों की संख्या, धन-लेनदेन और नेटवर्क की गहराई का पता लगाया जा सके।

साइबर अपराध पर शिकंजा

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि बेंगलुरु में तकनीकी सहायता, कॉल सेंटर और कस्टमर सपोर्ट के नाम पर चल रहे कई फर्जी नेटवर्क पहले भी पकड़े जा चुके हैं, मगर 'मस्क कम्युनिकेशंस' का नेटवर्क अधिक संगठित और तकनीकी रूप से उन्नत पाया गया है।

पुलिस ने लोगों को चेतावनी दी है कि किसी भी कॉल, ईमेल या संदेश पर भरोसा न करें जिसमें तकनीकी सहायता के नाम पर भुगतान मांगा जाए।

यह कार्रवाई संकेत देती है कि साइबर पुलिस बड़े और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैले ठगी नेटवर्क के खिलाफ और कठोर कदम उठाने की तैयारी में है।

भारत-चीन सीमा पर शक्ति प्रदर्शन: तीनों सेनाओं का पूर्वी प्रचंड प्रहार युद्धाभ्यास सफल

(जीएनएस)। भारत-चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) से सटे पूर्वी सेक्टर में भारतीय सेना ने शनिवार को अपनी सर्वश्रेष्ठ संयुक्त सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हुए एक्सरसाइज पूर्वी प्रचंड प्रहार को शानदार सफलता के साथ संपन्न किया। यह युद्धाभ्यास न केवल कठिन पर्वतीय इलाके और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ऑपरेशन की क्षमता को दर्शाता है, बल्कि शून्य से नीचे तापमान में त्रि-सेवा समन्वय की भारतीय तैयारी का भी मजबूत संदेश देता है। पूर्वी कमान के सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल आरसी तिवारी ने अग्रिम मोर्चों पर मौजूद जवानों से मुलाकात कर उनका मनोबल बढ़ाया और उन्हें आधुनिक युद्ध की चुनौतियों के लिए तैयार रहने का संदेश दिया।

रक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस अभ्यास में थलसेना, वायुसेना, नौसेना और आईटीबीपी की संयुक्त भागीदारी ने यह साबित किया कि भारतीय सेनाएं जटिल और बहु-डोमेन युद्धक्षेत्रों में एकीकृत कॉम्बैट टीम की तरह कार्य करने में पूरी तरह सक्षम हैं।

इस ऑपरेशन में स्पेशल फोर्सेज, मार्कोस, गरुड़, भैरव बटालियन और अरुणाचल स्काउट्स जैसी एलीट इकाइयों ने युद्धाभ्यास को नई धार प्रदान की। इन दलों की त्वरित तैनाती, लक्ष्य साधने की क्षमता और विशिष्ट सामरिक कौशल ने यह स्पष्ट किया कि वास्तविक परिस्थितियों में भी भारतीय सैनिक किसी भी चुनौती का जवाब देने के लिए तैयार हैं।

पूर्वी सेक्टर में यह शक्ति प्रदर्शन न केवल सामरिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसने भारत की सैन्य तैयारियों और बहु-स्तरीय सुरक्षा तंत्र को एक बार फिर मजबूत तरीके से सामने रखा है—यह संदेश स्पष्ट है कि भारतीय सेनाएं सीमा पर किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार और आत्मविश्वासी हैं।

ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप प्रमोशन केस में अभिनेता राणा दग्गुबाती एसआईटी के सामने पेश, कई सवालों का सामना

(जीएनएस)। हैदराबाद। तेलंगाना में अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी से जुड़े हाई-प्रोफाइल मामलों की कड़ी में शनिवार को अभिनेता राणा दग्गुबाती स्पेशल इंवेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) के सामने पेश हुए। राणा पर आरोप है कि उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर एक ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप का प्रचार किया था, जिसके बाद उन्हें नोटिस भेजकर पूछताछ के लिए बुलाया गया था।

अभिनेता खुद एसआईटी कार्यालय पहुंचे और करीब दो घंटे तक अधिकारियों के सवालों का सामना किया।

तेलंगाना सरकार ने अवैध ऑनलाइन बेटिंग के बढ़ते प्रभाव, युवाओं पर उसके दुष्प्रभाव और करोड़ों रुपये के अवैध लेन-देन को रोकने के लिए सीआईडी के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक की निगरानी में एक विशेष टीम गठित की है। इसी टीम ने प्रोमोशन से जुड़ी गतिविधियों के आधार पर राणा दग्गुबाती को जांच में शामिल होने के लिए बुलाया था।

पूछताछ के बाद बाहर निकलते हुए राणा दग्गुबाती ने मीडिया से संक्षिप्त बातचीत में कहा, "जो हुआ वह हो चुका है। अब ज़रूरी यह है कि हम इन गेमिंग ऐप्स के बारे में सही जानकारी और सही संदेश लोगों तक पहुंचाएं।"

राणा का यह बयान साफ संकेत देता है कि अभिनेता अपनी ओर से मामले को स्पष्ट

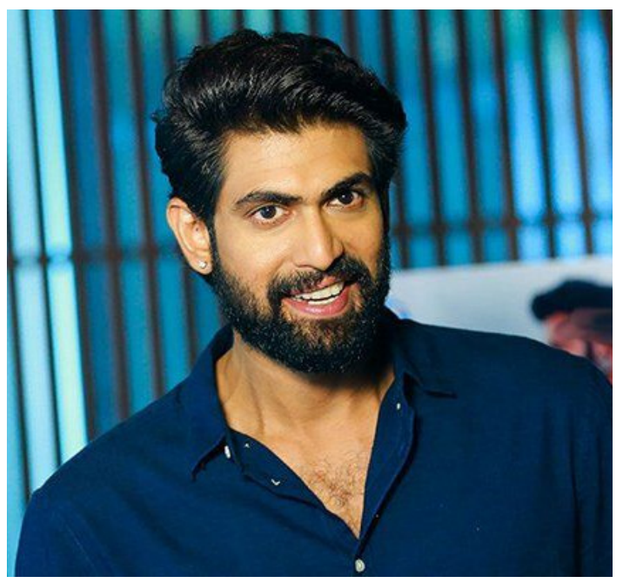

करने और युवाओं को जागरूक करने के प्रयासों में सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

तेलंगाना गेमिंग एक्ट 2017 के अनुसार राज्य में किसी भी प्रकार की ऑनलाइन बेटिंग पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसी कानून के तहत एसआईटी अब ऐसे सभी प्रकरणों की विस्तृत जांच कर रही है, जिनमें ऐप प्रमोशन या अप्रत्यक्ष समर्थन का संदेह हो। राणा दग्गुबाती के पेश होने के बाद इस मामले ने नया मोड़ ले लिया है। आने वाले दिनों में एसआईटी अन्य सेलिब्रिटी और सोशल मीडिया प्रमोटर्स को भी तलब कर सकती है, जिससे यह जांच एक बड़े नेटवर्क की परतें खोलने की दिशा में आगे बढ़ सकती है।